सांध्य दैनिक

4PM

जिद...सच की

मूल्य ₹ 3/-

हम ऐसी दुनिया में जीते हैं जहां फेसबुक पर हमारे बहुत से दोस्त हैं पर फिर भी हमने मानवीय लगाव खो दिया है।
-रॉबिन शर्मा

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 203 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, सोमवार 31 अगस्त, 2026

महिला एशिया कप: भारत ने थाईलैंड को 94... 7
बिहार में शुरू होगा यात्राओं का... 3
सर्वे में विजय के प्रधानमंत्री बनने की... 2

सेंसर ने रद्द कर दी संजय शर्मा की मूवी 'सहिया'

» सीबीएफसी फिल्मों को प्रमाणित कर रहा है या उन कहानियों को सेंसर कर रहा है जो उसे असहज लगती हैं?

» संघर्षग्रस्त इलाके में आदिवासियों की प्रेम कहानी दिखाना नक्सलवाद का समर्थन माना जाएगा तो रचनात्मक स्वतंत्रता कहां बचेगी?

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। एक पत्रकार ने कलम उठाई तो सत्ता परेशान हो गयी। सवाल पूछे तो मुकदमे आए आवाज बुलंद की तो चैनल पर कार्रवाई हुई लेकिन संजय शर्मा नहीं झुके। अब उसी संजय शर्मा ने कैमरा उठाया एक फिल्म बनाई सहिया और अपनी जिंदगी की जमा पूंजी दांव पर लगा दी तो फिल्म के सामने सेंसर बोर्ड की दीवार खड़ी कर दी गयी। दीवार भी अंबुजा सीमेंट जैसी मजबूत टूटी नहीं।

पहले फिल्म के सार्टिफिकेट को देने में देरी हुई सवाल पूछे तो एप्लीकेशन को सेंसर बोर्ड की कमेटी में भेज दिया गया और आज पता चला कि कमेटी ने सार्टिफिकेट देने से मना कर दिया और पिक्चर रिलीज को रद्द कर दिया है। इस खबर से समाज में सनसनी है और हर कोई सवाल पूछ रहा है कि आखिर यह क्या हो रहा है। लोकतंत्र में असहमति की आवाज को जवाब दिये जाने की परंपरा है लेकिन यहां तो उसे कुचला जा रहा है। अब सवाल सिर्फ इतना नहीं है कि सहिया को प्रमाण पत्र क्यों नहीं मिला? असली सवाल यह है कि आखिर इस फिल्म में ऐसा क्या है जिससे सत्ता की नींद उड़ने का खतरा पैदा हो गया? देश में फिल्मों को प्रमाण पत्र देने वाली संस्था केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने संजय शर्मा की फिल्म सहिया को पब्लिक रिलीज का सार्टिफिकेट देने से इनकार कर दिया है। बोर्ड की ओर से जारी निर्णय में फिल्म पर कई गंभीर आपत्तियां दर्ज कराई गयी हैं। कहा गया है कि फिल्म समाज के मूल्यों और मानकों के प्रति अपेक्षित संवेदनशीलता नहीं दिखाती हिंसा जैसी असामाजिक गतिविधियों का महिमामंडन या औचित्य साबित कर सकती है आदिवासी विरोधी और राष्ट्र विरोधी दृष्टिकोण को बढ़ावा दे सकती है देश की संप्रभुता और अखंडता के खिलाफ तत्व रखती है राज्य की सुरक्षा तथा सार्वजनिक व्यवस्था को खतरे में डाल सकती है। और अंत में बोर्ड ने सशस्त्र विद्रोह कार्यकर्ताओं और आंदोलन के कथित महिमामंडन तथा रोमांटिक चित्रण की आशंका भी जतायी है।

असली सवाल- आखिर इस फिल्म में ऐसा क्या है जिससे सत्ता की नींद उड़ने का खतरा पैदा हो गया?

संजय शर्मा ने प्रेस कांफ्रेंस कर अपना दर्द साझा किया

सेंसर बोर्ड द्वारा रिलीज प्रमाण पत्र देने से मना कर देने के बाद सहिया फिल्म के निर्माता निर्देशक संजय शर्मा ने प्रेस कांफ्रेंस कर अपना दर्द साझा किया और सेंसर बोर्ड से अपने सवालों के जवाब देने को कहा। सीबीएफसी द्वारा उठाये गये प्रश्नों का सिलसिलेवार जवाब देने क बाद संजय शर्मा ने ऐसे सवाल उठाये हैं जो सीधे व्यवस्था से टकरा रहे हैं। संजय शर्मा ने साफ कर दिया कि आगे की कार्रवाई के लिए आवेदन कर दिया गया है उन्हें उम्मीद है कि वहां से न्याय होगा यदि फिर भी फिल्म रिलीज के लिए अड़ंगा लगाया जाता है तो फिर वह हाईकोर्ट की शरण में जाएंगे।

पहला सवाल- 51 दिन क्यों?

सहिया फिल्म के निर्माता निर्देशक संजय शर्मा ने कहा है कि सहिया को प्रायोरिटी स्कीम के तहत प्रमाणन के लिए भेजा गया था और इसके लिए अतिरिक्त शुल्क भी दिया गया। लेकिन फिल्म की स्क्रीनिंग में लगभग 51 दिन लग गये। अब सवाल सीधा है जब निर्माता प्राथमिकता के लिए अतिरिक्त शुल्क दे रहा है तो प्राथमिकता आखिर है किस बात की? अगर फिल्म को देखने में भी वही इंतजार करना है जो सामान्य आवेदन में होता है तो फिर प्रायोरिटी स्कीम का मतलब क्या रह गया?

कोर्ट की शरण में जाएंगे संजय शर्मा

निर्माता निर्देशक संजय शर्मा ने साफ कर दिया है कि सीबीएफसी के फैसले के खिलाफ अभ्यावेदन दिया गया है। उम्मीद अभी खत्म नहीं हुई लेकिन अगर वहां से न्याय नहीं मिला तो अगला रास्ता हाईकोर्ट होगा। सहिया की रिलीज अभी रुकी है लेकिन बहस चल पड़ी है।

दूसरा सवाल- मोबाइल बाहर क्यों?

निर्माता निर्देशक संजय शर्मा ने प्रमाणन प्रक्रिया की पारदर्शिता पर भी सवाल खड़ा किया। उनका कहना है कि स्क्रीनिंग के बाद समिति से बातचीत के लिए बुलाए जाने पर उनसे मोबाइल फोन बाहर रखने को कहा गया। संजय शर्मा पूछते हैं क्यों? एक वैधानिक संस्था में फिल्म से जुड़े आधिकारिक विमर्श में निर्माता को रिकॉर्डिंग से दूर रखने का औचित्य क्या है? संजय शर्मा ने कहा कि इस सवाल का स्पष्ट जवाब मिलना चाहिए उन्होंने कहा कि मैं कोई हवा में आरोप नहीं लगा रहा हूं। मेरा सीधा सवाल है कि एक आधिकारिक बातचीत के दौरान निर्माता को मोबाइल फोन साथ रखने से रोकने का औचित्य क्या है? उन्होंने कहा कि प्रमाणन प्रक्रिया के दौरान हुई घटनाओं ने उनके मन में यह गंभीर आशंका पैदा की है कि सहिया को वह निष्पक्ष, पारदर्शी और समयबद्ध प्रक्रिया नहीं मिली जिसकी अपेक्षा हर फिल्म निर्माता को एक वैधानिक संस्था से करने का अधिकार है।

तीसरा सवाल- आदिवासी दिखाना अपराध कब हो गया?

निर्माता निर्देशक संजय शर्मा ने सवाल उठाया है कि क्या किसी आदिवासी गांव को पर्दे पर दिखाना नक्सलवाद का समर्थन है? क्या हिंसा के बीच फंसे सामान्य लोगों की पीड़ा दिखाना सशस्त्र आंदोलन का प्रचार है? क्या किसी कहानी की भौगोलिक पृष्ठभूमि ही उसकी विचारधारा तय कर देगी? और अगर जवाब हां है तो सवाल सिर्फ सहिया का नहीं रहेगा फिर भारतीय सिनेमा में संघर्षग्रस्त इलाकों की कहानियां कौन कहेगा?

चौथा सवाल- फिल्म दिखाना समर्थन कैसे हो गया?

निर्माता निर्देशक संजय शर्मा की दलील है कि किसी चीज को पर्दे पर दिखाना उसका समर्थन करना नहीं होता। अपराधी की कहानी दिखाना अपराध का समर्थन नहीं। आतंकवाद दिखाना आतंकवाद का प्रचार नहीं। हिंसा दिखाना हिंसा का महिमामंडन नहीं। उसी तरह नक्सल प्रभावित इलाके में रहने वाले सामान्य आदिवासी परिवारों की जिंदगी दिखाना नक्सलवाद का समर्थन कैसे हो सकता है?

पांचवां सवाल- फिल्मकार प्रमाणपत्र मांग रहा है या एहसान?

निर्माता निर्देशक संजय शर्मा ने दो टूक कहा कि फिल्मकार सीबीएफसी से कोई एहसान नहीं मांग रहा। मांग सिर्फ इतनी है कि प्रक्रिया निष्पक्ष हो पारदर्शी हो और समयबद्ध हो। क्योंकि फिल्म सिर्फ एक फाइल नहीं होती। उसमें निर्माता के करोड़ों रुपये होते हैं। कलाकारों की मेहनत होती है। तकनीशियनों का पसीना होता है संगीतकारों की मेहनत होती है डिस्ट्रीब्यूशन और प्रचार का पूरा कारोबार जुड़ा होता है। और रिलीज में देरी का मतलब सिर्फ कैलेंडर बदलना नहीं कभी कभी करोड़ों का नुकसान होता है।

भाजपा एक मिलावटी पार्टी : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले- सत्ता में आने पर सपा बंद पड़े 26 हजार प्राथमिक स्कूल खोलेगी और जातीय जनगणना कराएगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार पर एकबार फिर करारावार किया है। उन्होंने नौकरी के वादे और भ्रष्टाचार को लेकर तीखा हमला बोला। उन्होंने भाजपा पर मंदिरों के चढ़ावे में चोरी का आरोप लगाया और उसे मिलावटी पार्टी कहा। अखिलेश ने वादा किया कि सत्ता में आने पर सपा बंद पड़े 26 हजार प्राथमिक स्कूल खोलेगी और जातीय जनगणना कराएगी।

सपा प्रमुख ने कहा कि अगर उनकी पार्टी उत्तर प्रदेश में दोबारा सत्ता में आती है तो भाजपा शासन के दौरान बंद किए गए 26 हजार प्राथमिक विद्यालयों को फिर से खोला जाएगा। अखिलेश ने आरोप लगाया कि स्कूल बंद होने का सबसे ज्यादा असर पीडीए यानी पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चों पर पड़ा है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा नहीं चाहती कि पीडीए समुदाय के लोग शिक्षित हों। अखिलेश ने कहा कि गांवों में स्कूल बंद होने से खासतौर पर लड़कियों की शिक्षा प्रभावित हुई है। अखिलेश यादव ने जातीय जनगणना कराने और पिछड़े वर्गों को समान अधिकार देने की अपनी मांग भी दोहराई। उन्होंने कहा कि जिस तरह बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर ने संविधान में समाज के हर वर्ग के हितों को जगह दी, उसी तरह समाजवादी पार्टी आबादी के आधार पर अलग-अलग समुदायों को प्रतिनिधित्व और अधिकार दिलाने की कोशिश करेगी।

मुख्यमंत्री के एक लाख युवाओं को नौकरी देने के बयान पर कसा तंज

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अगले कुछ महीनों में एक लाख युवाओं को नौकरी देने के हालिया बयान पर तंज कसा है। अखिलेश यादव ने कहा कि विधानसभा चुनाव में अब कुछ ही समय बचा है और इसी दौरान एक लाख नौकरियां देने की बात कही जा रही है। उन्होंने कहा कि जनवरी के बाद आचार संहिता लागू हो जाएगी। उत्तर प्रदेश में 27 की शुरुआत में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित हैं। अखिलेश यादव ने भाजपा पर लोगों को गुमराह करने का आरोप लगाते हुए उसे 'मिलावटी' बताया। उन्होंने ई20 पेट्रोल को लेकर चल रहे विवाद का जिक्र करते हुए कहा कि इन 'मिलावटी लोगों' ने पेट्रोल में भी मिलावट कर दी है। उनका इशारा पेट्रोल में 20 प्रतिशत तक इथेनॉल मिश्रण वाले ई20 ईंधन को लेकर चल रही बहस की ओर था।

बीजेपी ने गरीबों को निराश किया

अखिलेश यादव ने सत्तारूढ़ बीजेपी पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने गरीबों को निराश किया है। अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावे की कथित चोरी का मुद्दा उठाते हुए अखिलेश ने सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि राज्य में बड़ी संख्या में लोग मंदिरों के बाहर भीख मांगने के लिए मजबूर हैं, जबकि कुछ लोग मंदिरों के अंदर से ही चोरी कर रहे हैं। उन्होंने हा कि मंदिरों के बाहर बड़ी संख्या में लोग दान मांगते दिखाई देते हैं, लेकिन कोई भिखारी मंदिर के अंदर से चोरी नहीं करता। अखिलेश ने भाजपा को 'अधर्मी' बताते हुए आरोप लगाया कि पार्टी भगवान को चढ़ाए गए चढ़ावे में भी चोरी कर रही है।

जिस पर राजनीति कर रहे थे, उसके हत्यारे नर्क पहुंच गए : राजभर

यूपी में अंकित बालियान हत्याकांड को लेकर सियासत तेज हो गई है। सुभासपा अध्यक्ष ओपी राजभर ने सपा मुखिया अखिलेश यादव पर तंज कसा है। एक्स पर पोस्ट करते हुए उन्होंने लिखा कि आप जिस पर राजनीति कर रहे थे। अब उसके हत्यारे नर्क में पहुंच गए हैं। आगे लिखा कि किसी बेटे की लाश पर जाट लिखकर राजनीति करना संवेदना नहीं, सौदागरी है। हत्या जैसे गंभीर मामले को जातीय राजनीति से नहीं जोड़ना चाहिए। हत्या मानवता के खिलाफ अपराध है, किसी गोत्र की जागीर नहीं। ओपी राजभर ने कहा कि सपा मुखिया को जाट तब याद आया, जब चुनाव आने वाला है। जनता सब देख रही है। जाति की राजनीति भी और पुलिस के कानून व्यवस्था के राज को भी। दरअसल, अंकित बालियान की हत्या के मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को मुठभेड़ में मार गिराया है।

हमें राजनीति चौधरी साहब ने सिखाई, आपने नहीं : जयंत

» राष्ट्रीय लोक दल अध्यक्ष ने किया विपक्ष पर हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव और राष्ट्रीय लोक दल अध्यक्ष जयंत चौधरी के बीच वार-पलटवार तेज हो गई है। 'चवन्नी' की सियासी तकरार अब राजनीति की 'एबीसीडी' तक पहुंच गई है। सपा प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल के बयान पर रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी ने रविवार को लखनऊ में अखिलेश यादव का नाम लिए बिना ऐसा पलटवार किया कि गठबंधन की पुरानी तल्खी फिर सतह पर आ गई।

इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान के सभागार में सम्मेलन के आयोजक और पार्टी में शामिल स्नातक और शिक्षक राजनीति के नेता बी के शुक्ला का स्वागत करते हुए जयंत ने अखिलेश का नाम लिए बिना कहा कि आप कहते हैं कि हमने सिखाया है। हमें चौधरी साहब ने सिखाया है। उन्होंने चेतावनी भरे अंदाज में कहा कि अब शांत रहने का वक्त नहीं है। कुछ बातें बर्दाश्त के बाहर होती हैं। चुनाव में चौधरी चरण सिंह का समाज ही इसका जवाब देगा। इसके लिए अकेले जयंत चौधरी को जवाब देने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जयंत ने कहा कि उनके बारे में राजनीति की एबीसीडी नहीं जानने जैसी बातें कही जा रही हैं। लेकिन उन्हें एबीसीडी का मतलब अहंकार, भ्रष्टाचार, चोरी और धोखाधड़ी नहीं, बल्कि सम्मान, संघर्ष और समाज को साथ लेकर चलना चौधरी चरण सिंह ने सिखाया है।

अखिलेश यादव के 'चवन्नी' वाले बयान पर जयंत ने कहा कि वह अपना सम्मान अपने साथ लेकर चलते हैं, इसलिए कोई उनका अपमान नहीं कर सकता। लेकिन इस प्रकरण में सबसे गलत बात यह हुई कि बात उनके तक सीमित नहीं रही, बल्कि उनकी जाति तक ले जाई गई।जयंत ने कहा कि जब उनका नाम लेकर बात नहीं की गई थी तो उन्होंने भी नाम लेकर जवाब नहीं दिया। लेकिन सपा के जिम्मेदार लोगों की ओर से दिए जा रहे बयानों से यह जरूर सामने आ रहा है कि उन्हें बगल में रखकर उनके बारे में कितने तुच्छ विचार रखे जाते थे। पूर्वांचल को लेकर अखिलेश यादव के दोहे पर भी जयंत ने निशाना साधा।

उन्होंने कहा कि अपने परंपरागत वोट बैंक के अलावा नए मतदाताओं को जोड़ने के लिए ऐसे राजनीतिक संदेश दिए जा रहे हैं। लेकिन इससे पहले यह भी देखना चाहिए कि जो लोग पहले से साथ जुड़े हुए थे, उन्हें कितना सम्मान दिया गया और उन्हें कितना अपने साथ रखा जा सका। यह भी तो जनता देखेगी। उन्होंने कहा कि ऐसी हल्की बातें कहकर सपा के जिम्मेदार लोग यह बता रहे हैं कि जिस सहयोगी को साथ रखा गया, उसके बारे में उनके मन में क्या विचार थे।

पीडीए नहीं, पीड़ा और बौखलाहट

जयंत ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश में हर घटना को जाति के चश्मे से देखने की कोशिश हो रही है। यह कोई पीडीए नहीं है, यह पीड़ा और बौखलाहट है। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह जातीय ध्रुवीकरण के धुर विरोधी थे। उन्होंने कहा कि आज चौधरी चरण सिंह के नाम पर कई लोगों ने दल बनाए, झंडे का रंग बदला और चुनाव आते ही उनका नाम याद किया। चुनाव के बाद उन्हें भूल गए। वह इसे गलत नहीं मानते, लेकिन चौधरी साहब की तस्वीर लगाना आसान है और उनके कदमों पर चलना बेहद कठिन।

प्रदेश में कोई भी सरकार रालोद के बिना नहीं बन पाएगी : अनुपम मिश्र

कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष अनुपम मिश्र ने दावा किया कि प्रदेश में कोई भी सरकार रालोद के बिना नहीं बन पाएगी। केंद्रीय संसदीय बोर्ड सदस्य अनिल दुबे ने कहा कि चौधरी चरण सिंह ने जमीन तैयार की थी, जिसकी फसल कुछ लोग काट ले गए। वहीं अम्बरीश त्यागी ने 'टीम आरएलडी' के जरिये बूथ स्तर तक संगठन खड़ा करने का खाका रखा।

सर्वे में विजय के प्रधानमंत्री बनने की चर्चा पर मचा सियासी बवाल

» टीवीके के दावों पर भड़की डीएमके, बोली- इनकी कल्पना की कोई सीमा नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। हाल ही में जारी हुए मूड ऑफ़ द नेशन सर्वे के बाद तमिलनाडु की राजनीति में जुबानी जंग तेज़ हो गई है। सर्वे में तमिलगा वेत्री कज़गम (टीवीके) के प्रमुख और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री जोसेफ विजय को प्रधानमंत्री पद की पसंद के रूप में तीसरे स्थान पर दिखाया गया, जिसके बाद टीवीके कार्यकर्ताओं ने उन्हें 29 में पीएम बनाने का नैरेटिव आगे बढ़ाना शुरू कर दिया।

अब सत्ताधारी DMK और उसकी सहयोगी कांग्रेस ने TVK के इन दावों और सर्वे के आंकड़ों पर कड़ा पलटवार किया है। जहां डीएमके नेता भारती ने टीवीके की बातों का मज़ाक उड़ाते हुए कहा कि उनकी कल्पना की कोई सीमा नहीं है, वहीं कांग्रेस नेता मणिकम टैगोर ने इस नैरेटिव पर परोक्ष रूप से निशाना साधा। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री विजय का नाम लिए बिना या पीएम पसंद वाले सर्वे का सीधे जिक्र किए बिना, टैगोर ने कहा, हर आंकड़ा सच नहीं बताता। हर सर्वे लोगों की आवाज नहीं होता। 28 अगस्त को प्रकाशित नवीनतम सर्वे में विजय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कांग्रेस नेता राहुल गांधी के बाद तीसरे स्थान पर रहे। जब पीएम पद की पसंद और टीवीके की कोशिशों के बारे में पूछा गया, तो डीएमके सचिव भारती ने कहा, अगर पार्टी के सदस्य बोलेंगे, तो वे यह भी कह देंगे कि वह संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख बनने वाले हैं। कल्पना, कल्पना, उनकी कल्पना की कोई सीमा नहीं है। उन्हें जो सोचना है, सोचने दें। उन्होंने विजय को प्रधानमंत्री के तौर पर पेश करने के निहितार्थों पर भी सवाल उठाया, जबकि राहुल गांधी कांग्रेस के प्रधानमंत्री पद के चेहरे बने हुए हैं। कांग्रेस और TVK तमिलनाडु में सत्ता में सहयोगी हैं। उन्होंने कहा, जिस पल कोई कहता है कि वह प्रधानमंत्री बनेंगे, तो उन्होंने पहले ही तय कर लिया है कि राहुल गांधी प्रधानमंत्री नहीं बनेंगे, है ना? भारती ने आगे कहा, अगर कांग्रेस कार्यकर्ताओं में थोड़ी भी आत्म-सम्मान की भावना है, तो वे सामने आकर कहें कि उन्होंने तय कर लिया है कि राहुल गांधी प्रधानमंत्री नहीं बनेंगे। नहीं, नहीं, वही प्रधानमंत्री बनेंगे, और ये लोग उनकी पूजा करते रहें। इस बीच, कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने विजय या टीवीके का सीधे नाम लिए बिना सर्वे पर निशाना साधा। लोमड़ी का नकली पोल शीर्षक से एक तमिल पोस्ट शेयर करते हुए, टैगोर ने एक कहानी सुनाई जिसमें एक लोमड़ी जानवरों के बीच एक तथाकथित सर्वे करती है और उसके नतीजों का इस्तेमाल शेर और हाथी के बीच अविश्वास पैदा करने के लिए करती है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

शूटिंग चैंपियनशिप में यशवर्धन दीक्षित का सटीक निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप (लड़के) 26 लखनऊ के ला मार्टिनियर कॉलेज के 11वीं कक्षा के छात्र यशवर्धन दीक्षित ने नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप में अंडर-19 एयर राइफल (पीप साइट) इवेंट में सिल्वर मेडल जीता और स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के लिए चुने गए।

27 से 29 अगस्त 26 तक गोरखपुर के सेंट जूड्स स्कूल द्वारा आयोजित नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए ला मार्टिनियर कॉलेज के छात्र यशवर्धन दीक्षित ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 409.7 का स्कोर हासिल करते हुए रजत पदक प्राप्त किया। इसके पहले भी क्षेत्रीय शूटिंग चैंपियनशिप में भी यशवर्धन ने अंडर 19 पीप साइट एयर राइफल में स्वर्ण पदक अपने नाम किया था, जो चैंपियनशिप के दौरान उनकी असाधारण प्रतिभा, निरंतरता और खेल के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है।

यशवर्धन की इस उपलब्धि पर कॉलेज का प्रिंसिपल गैरी डोमिनिक एवरेट और शूटिंग कोच विकाश तोमर ने उन्हें शुभकामनाएँ दी व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि वे ऐसे ही कॉलेज का नाम रोशन करें। अब यशवर्धन दीक्षित राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले (स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ़ इंडिया) में ला मार्टिनियर कॉलेज का गर्व से प्रतिनिधित्व करेंगे।

बिहार में शुरू होगा यात्राओं का दौर

नीतीश कुमार, प्रशांत किशोर और तेजस्वी यादव की तैयारी

- बिना चुनावी मौसम की ऐसी रणनीति समझ से परे
- नीतीश कुमार 2 अक्टूबर से निकल सकते हैं यात्रा पर
- प्रशांत किशोर अगस्त-सितंबर में निकलेंगे यात्रा पर
- तेजस्वी भी जल्द ही निकलने वाले अधिकार यात्रा पर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में नई सरकार आ चुकी है। पर चुनावों से पहले जो नेताओं के दौरे हो रहे थे अब भी जारी है। या ऐसा कह सकते है कि बिहर की सियासत में एक बार फिर से यात्रा का दौर लौट रहा है। मुख्यमंत्री पद छोड़ने के बाद नीतीश कुमार, बांकीपुर विधायक बनने के बाद प्रशांत किशोर और राजद का कार्यकारी अध्यक्ष बनने के बाद तेजस्वी यादव यात्रा पर निकलने वाले हैं।

बिहार में अभी न तो विधानसभा का और न ही लोकसभा का चुनाव है, लेकिन सूबे का सियासी मौसम चुनावी चुनावी सा लगने लगा है। जिसे देखो बिहार की यात्रा पर निकल जनता का हाल चाल लेने को आतुर हैं। यात्रा पर निकलने वाले ये कोई पार्टी के छोटे मोटे नेता नहीं हैं। सभी अपने अपने दल के नामवर हैं। दिलचस्प तो यह है कि इन नामवर नेताओं को अचानक बिहार की जनता की फिक्र तब हो रही है, जब जनता का मतलब वोट नहीं होता। चलिए जानते हैं कौन कौन नामवर नेताओं ने जनता से रूबरू होने का फैसला किया है।

तेजस्वी करने जा रहे अधिकार यात्रा

नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव लोकभवन मार्च के बाद अपनी सक्रियता बरकरार रखने जा रहे हैं। बताया जा रहा था कि तेजस्वी यादव अगस्त 26 माह से ही बिहार की एक बड़ी राजनीतिक यात्रा पर निकलने वाले थे। हालांकि वर्तमान में वे पटना में ही सक्रिय हैं और 19 अगस्त 26 को पटना में पार्टी के मार्च के बाद आगामी यात्रा की रूप रेखा तैयार कर रहे हैं। पार्टी सूत्रों की मानें तो यात्रा का उद्देश्य आरजेडी संगठन को मजबूत करना, पार्टी का विस्तार करना और जमीनी हकीकत के साथ युवाओं की समस्याओं को समझना है। इस यात्रा की रूपरेखा और तैयारियों की जिम्मेदारी पार्टी द्वारा मंगनी लाल मंडल को सौंपी गई है।

नीतीश को यात्रा करने में अनुभव

विकास पुरुष कह लें या सुशासन कुमार, एक बार फिर से नीतीश कुमार के जेहन में जनता की सुध लेने की इच्छा जगी है। पार्टी सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार जनता दल यूनाइटेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार अक्टूबर 2026 में एक बार फिर बिहार यात्रा पर निकलने की तैयारी में जुट गए हैं। हालांकि मुख्यमंत्री का पद छोड़ते वक्त नीतीश कुमार ने राज्य की जनता और अपने कार्यकर्ताओं से वादा किया था कि वे उनसे दूर नहीं जा रहे हैं। नीतीश कुमार अपने उसी वादे का निर्वहन करने जनता और कार्यकर्ताओं के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज कराने आ रहे हैं। मुख्यमंत्री नहीं रहने पर ये उनकी पहली राज्यव्यापी यात्रा होगी, जिसके तहत वे सभी जिलों का दौरा करेंगे।

प्रशांत किशोर भी निकलेंगे सियासी यात्रा पर

बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव की ऐतिहासिक जीत के जश्न का अभी खुमार अभी टूटा भी नहीं है कि जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर सितंबर 2026 में फिर से एक बार व्यापक बिहार यात्रा पर निकलने की तैयारी करने लगे हैं। हालांकि इस यात्रा को ले कर प्रशांत किशोर का कंसेप्ट साफ है। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य आगामी पंचायत और एमएलसी चुनावों से पहले जमीनी स्तर पर संगठन को तैयार करना है। इस वजह से सितंबर से प्रशांत किशोर विभिन्न जिलों, गांवों और कस्बों का दौरा कर जन-संवाद करेंगे।

गांधी जयंती से नीतीश शुरू कर सकते हैं अपनी यात्रा

माना जा रहा है कि नीतीश कुमार की यात्रा अक्टूबर 2026 में संभावित है। संभावित तो यह भी है कि सब कुछ ठीक रहा तो 2 अक्टूबर यानि गांधी जयंती के दिन चंपारण से नीतीश कुमार की यात्रा की शुरुआत हो सकती है। पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा अभी से ही यात्रा की रूपरेखा तैयार करने लगे हैं और इस संदर्भ में जिम्मेदारियां भी निर्धारित की जाने लगी हैं। माना जा रहा है कि नीतीश कुमार राज्य के सभी 38 जिलों में जाकर आम लोगों और कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद करेंगे तथा उनकी समस्याएं सुनेंगे।

कर्नाटक में वंदे मातरम पर रार, नहीं बदलेगा कांग्रेस सरकार का रुख

- सीएम शिवकुमार बोले- फैसले पर रहेंगे कायम, भाजपा ने घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। कर्नाटक में वंदे मातरम को लेकर रार मची हुई है। मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने वंदे मातरम को लेकर एक फैसला लिया। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार वंदे मातरम के केवल शुरुआती दो पद गाने के कांग्रेस के फैसले का पालन करेगी। वे पार्टी के इस रुख के साथ हैं।

दरअसल, कर्नाटक में स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान सभी छह पद गाए जाने की बात को खारिज करते हुए शिवकुमार ने कहा कि यह फैसला उनकी जानकारी के बिना लिया गया था। सरकार केवल शुरुआती दो पद ही गाएगी।

मैं अपनी पार्टी की विचारधारा में विश्वास करता : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार से जब स्वतंत्रता दिवस समारोह में राष्ट्रगीत को पूरा न गाए जाने के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा, मैं अपनी पार्टी की विचारधारा में विश्वास करता हूं। हमने जो भी फैसला किया है, मैं उस पर कायम हूं। हो सकता है कि मेरी जानकारी के बिना या राज्यपाल भवन में ऐसा हुआ हो, लेकिन भविष्य में और सरकार के किसी भी कार्यक्रम में हम उसी बात पर कायम रहेंगे जो हमने पहले तय किया था।

भारी कीमत चुकानी पड़ेगी : गौरव वल्लभ

गौरव वल्लभ ने कहा, आप यह सब किसी खास धार्मिक समुदाय को खुश करने के लिए कर रहे हैं। देश की जनता आपको देख रही है। अगर कोई संवैधानिक पद पर बैठा व्यक्ति संविधान का अपमान करता है, तो आने वाले समय में, कर्नाटक चुनावों और आम चुनावों में, आपको और आपकी पार्टी को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। इस देश में राष्ट्रगान का अपमान बर्दाश्त नहीं किया जाएगा, और कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी।

कांग्रेस का ये फैसला

कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) ने पिछले हफ्ते 1937 के अपने उस प्रस्ताव को फिर से दोहराया, जिसके अनुसार सार्वजनिक और राष्ट्रीय कार्यक्रमों में वंदे मातरम के सिर्फ शुरुआती दो पद ही गाए जाने चाहिए। यह फैसला तब लिया गया जब नए वंदे मातरम बिल में राष्ट्रीय गीत के सभी पद गाना जरूरी कर दिया गया था। इसे गाने के तरीके को लेकर कांग्रेस और भाजपा के बीच राजनीतिक विवाद चल रहा था।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

अपनी बात रखें पर दूसरों का ख्याल भी जरूरी

इसमें कोई दो राय नहीं कि लोकतंत्र में अपनी बात कहने, अपनी बात रखने और अपना विरोध अंकित कराने का सबको अधिकार है। कोई गलत हो रहा है तो उसका विरोध भी होना चाहिए पर इसका मतलब यह तो नहीं होना चाहिए कि हम अपनी बात कहने के चक्कर में दूसरों को अपने सामान्य नागरिक अधिकारों से वंचित कर दें।

लोकतंत्र में धरना प्रदर्शन करना जनता का अधिकार है। पर उससे लोगों को परेशानी हो वह अनुचित है। अभी हाल में आये दिन होने वाले प्रदर्शनों के चलते सामान्य जनजीवन को बंधक बना देने की प्रवृति पर दिल्ली उच्च न्यायालय की टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है कि प्रदर्शनों के कारण कई बार तो जीवन मरण तक के हालात पैदा हो जाते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि लोकतंत्र में अपनी बात कहने, अपनी बात रखने और अपना विरोध अंकित कराने का सबको अधिकार है। कोई गलत हो रहा है तो उसका विरोध भी होना चाहिए पर इसका मतलब यह तो नहीं होना चाहिए कि हम अपनी बात कहने के चक्कर में दूसरों को अपने सामान्य नागरिक अधिकारों से वंचित कर दें। विरोध प्रदर्शन के साथ ही साथ दायित्व भी होता है। अन्य सब कारणों और परिणामों को थोड़ी देर के लिए अलग कर भी दिया जाएं तो भी हालात यहां तक हो जाते हैं कि यातायात प्रभावित होने से तत्काल मेडिकल रिलिफ की आवश्यकता वाले बीमारों तक का जीवन संकट में पड़ जाता है।

शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन का विरोध भी नहीं होता पर कब इस तरह के प्रदर्शन हिंसक हो जाते हैं और कानून व्यवस्था के गंभीर हालात हो जाते हैं इसका खामियाजा प्रदर्शनकारियों को नहीं अपितु प्रशासन और आमजन को भुगतना पड़ता है। सीजीपी के हालिया प्रदर्शनों के दौरान दिल्ली में जो हालात बने और जयपुर में पिछले दिनों सीजीपी द्वारा स्कूल प्रकरण को लेकर ग्रामवासियों और सीजीपी लोगों के साथ हालात बने यह अपने आप में गंभीर हो जाता है। रांची और देश के अन्य स्थानों के प्रदर्शनों को भी इसी संदर्भ में देखना होगा। शहर की सामान्य व्यवस्था को ही प्रभावित करने वाले स्थानों पर प्रदर्शन स्वीकृति पर भी प्रश्न उठना स्वाभाविक है। न्यायमूर्ति अमित महाजन की यह टिप्पणी महत्वपूर्ण हो जाती है कि शहर के बीच प्रदर्शन की अनुमति क्यों कर दी जानी चाहिए। दरअसल सीजीपी द्वारा जंतर-मंतर पर प्रदर्शन किये गये और यह प्रदर्शन देखते देखते हिंसक हो गया। इसके बाद प्रदर्शनकारियों और पुलिस प्रशासन और पक्ष प्रतिपक्ष द्वारा एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप का दौर चल जाता है पर मूल कारण को नजरअंदाज कर दिया जाता है। क्या कभी सोचा है कि हमारे प्रदर्शन से प्रदर्शन वाले शहरवासियों को कितना प्रभावित करता है। प्रदर्शन वाले शहर का कहीं ज्यादा तो कहीं कम यातायात प्रभावित हो जाता है। निजी व सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था बाधित हो जाती है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

बीमार मानसिकता से मुक्ति की हो ईमानदार कोशिश

विश्वनाथ सचदेव

बरसों पुरानी बात है, शायद मध्य प्रदेश की है। परिगणित जाति की एक महिला सरपंच एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी से मिलने गयी थीं। काम हो जाने के बाद जब वह सरपंच कार्यालय से चली गयीं तो उस अधिकारी ने वह कुर्सी धुलवाकर 'पवित्र' करवायी थी जिस पर परिगणित जाति की महिला बैठी थी! यह समाचार तब कुछ अखबारों में छपा था। कुछ चर्चा भी हुई थी इसे लेकर। पर जल्द ही यह घटना लोग भूल गये। अपने ढंग की अकेली घटना नहीं थी यह। तथाकथित छोटी-जाति वालों के साथ ऐसा घटता रहता है। कभी घोड़े पर चढ़कर बारात ले जाने वाला कथित छोटा जाति वाला कथित उच्च जाति के गुस्से का शिकार बनता है तो कभी किसी स्कूल में छोटी जाति के बच्चों को पृथक बिठाने का समाचार मिलता है। पर हमारी सामाजिक स्मृति में ऐसी घटनाएं बहुत दिन तक नहीं रहतीं। भूल जाते हैं हम कि हमारे तथाकथित समतामूलक समाज में ऐसा भी कुछ घटा है या घट रहा है।

नहीं भुलाया जाना चाहिए ऐसी बातों को। इन्हें याद रखना जरूरी है ताकि हमें यह अहसास होता रहे कि प्रगति के सारे दावों के बावजूद हमारी सोच कितनी पिछड़ी हुई है। हाल ही में उत्तराखंड के हल्द्वानी में ऐसी ही एक शर्मनाक घटना घटी थी, जिसे याद रखा जाना जरूरी है। राज्यसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के साथ घटी इस घटना का विवरण उन्होंने स्वयं राज्यसभा में दिया था। यह अच्छी बात है कि राज्यसभा में सत्तारूढ़ पक्ष के नेता ने इस प्रकरण की जांच करने का आश्वासन देकर खड़गे जी की पीड़ा पर कुछ मरहम लगाने का काम किया। पर यह पीड़ा सिर्फ खड़गे जी की नहीं है, सिर्फ उनकी ही पीड़ा होनी भी नहीं चाहिए। इस पीड़ा का अहसास उस हर भारतीय को होना चाहिए जो समता और न्याय के आदर्शों में विश्वास करता है, जो यह मानता है कि हमारा संविधान देश के हर नागरिक को समानता का अधिकार देता है। राज्यसभा में विपक्ष के नेता ने हल्द्वानी में घटी इस शर्मनाक घटना का विवरण देते हुए बताया था कि यहां मैदान में उनका भाषण था, उस जगह और उस मंच को गंगाजल से धोकर शुद्ध किया गया था।

शुद्धीकरण का आयोजन करने वाले कथित उच्च वर्ण वालों का कहना था कि जहां यह सभा हुई थी, वहां रामलीला का आयोजन होता है। इसलिए हवन करके जगह को शुद्ध किया गया! इस अस्वीकार्य घटना की जांच कहां तक पहुंची है, पता नहीं। अक्सर ऐसी घटनाओं को दुर्भाग्यपूर्ण बताकर भुला दिया जाता है। पर होना यह चाहिए कि

फिर जब कुछ ऐसा घटे तो हम यह अनुभव करें कि स्वतंत्रता के अस्सी साल बाद भी हम सामाजिक ऊंच-नीच के अभिशाप को ढो रहे हैं। जिस संगठन पर हल्द्वानी की इस घटना का आरोप है उसके सदस्यों का कहना है कि खड़गे जी की सभा जिस मैदान में हुई थी, वहां रामलीला का आयोजन होता है, उस जगह का राजनीतिक इस्तेमाल नहीं होना चाहिए था। किसी भी सोचने-समझने वाले विवेकशील व्यक्ति को यह तर्क समझ नहीं आ सकता। कहा यह जा रहा है कि 'शुद्धीकरण' का यह तमाशा चुनावी राजनीति का हिस्सा है। यह आयोजन करने वालों ने चुनावी राजनीति के संदर्भ में यह सब किया हो, पर बात चुनावी राजनीति की ही नहीं है; मामला राजनीतिक टकराव से कहीं ज्यादा उस बीमार मानसिकता का है जो हमें जातियों, वर्गों, वर्णों में बांटती है। जातिगत पूर्वाग्रह कहीं बहुत गहरे तक व्याप्त हैं। हल्द्वानी का यह प्रकरण हमारी सोच पर कुंडली मारकर बैठे इन पूर्वाग्रहों को सामने लाता है। मनुष्यता का तकाजा है कि हम इससे उबरें। राजनीतिक स्वतंत्रता हमने लगभग अस्सी साल पहले प्राप्त कर ली थी, पर अधूरी है यह स्वतंत्रता। आवश्यकता सामाजिक रूढ़ियों से उबरकर एक ऐसे समाज को स्वतंत्र बनाने की है जहां व्यक्ति की नाप-तौल उसकी धार्मिक पहचान और उसकी जाति के आधार पर नहीं हो। हमारे संविधान के प्रमुख शिल्पी डॉक्टर बी.आर. अम्बेडकर का वह संबोधन याद रखने की आवश्यकता है जो उन्होंने संविधान-सभा की आखिरी बैठक में दिया था। अपने उस ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने कहा था, '26 जनवरी, 1950 को भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बन जाएगा, पर उसकी स्वतंत्रता का क्या होगा?

इसी भाषण में उन्होंने यह भी आगाह किया था कि उन्हें जाति और वर्ण जैसे देश के पुराने शत्रुओं की भी चिंता है। हमें राजनीतिक जनतंत्र से ही संतुष्ट नहीं हो जाना, हमें इसे सामाजिक जनतंत्र भी बनाना होगा। बिना सामाजिक जनतंत्र के आधार के राजनीतिक जनतंत्र नहीं बन सकता। सामाजिक जनतंत्र का मतलब है एक ऐसी जीवन-पद्धति जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को जीवन के सिद्धांतों के रूप में स्वीकारती है। ये तीनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन्हें एक-दूसरे से पृथक करने का मतलब जनतंत्र के उद्देश्य को ही समाप्त करना होगा... समानता नहीं होगी तो इसका मतलब बहुतों पर कुछ का आधिपत्य होगा और समानता बिना स्वतंत्रता के व्यक्ति की पहल की क्षमता को नष्ट कर देगी।'

पाकिस्तान की हवाई ताकत में छिपा चीन का हाथ

नमिता बर्थवाल

मई 2025 के सैन्य टकराव ने भारत की एक पुरानी चिंता पर ध्यान और ज्यादा केंद्रित करवा दिया कि असल लड़ाई के दौरान चीन और पाकिस्तान के बीच का सैन्य सहयोग गठजोड़ कैसा रहेगा? इसका जवाब जरूरी नहीं कि चीन द्वारा सीधे लड़ाई में शामिल होने में ही हो। इसकी अधिक परिणामी भूमिका पाकिस्तान की युद्धक्षेत्र का अवलोकन करने, जानकारी प्रोसेस करने व तेजी से कार्रवाई करने की क्षमता को मजबूत करने में हो सकती है। यह बात पीपुल्स लिबरेशन आर्मी एयर फोर्स और पाकिस्तान एयर फोर्स के बढ़ते सहयोग में साफ तौर पर दिखाई दे रही है। सालों तक, इस रिश्ते को मुख्य रूप से चीन द्वारा पाकिस्तान को दिए गए हथियारों और उपकरणों जैसे कि जे-10सी, एयर-डिफेंस सिस्टम, मिसाइलें और पायलट रहित हवाई वाहनों (ड्रोन) के नजरिए से देखा जाता था।

आज सवाल यह नहीं है कि पाक के पास कितने चीनी लड़ाकू विमान या मिसाइलें हैं, बल्कि यह प्रश्न है कि क्या चीन पाकिस्तान को एक ऐसा सैन्य सिस्टम बनाने में मदद कर रहा है जो तेजी से फैसला लेने में समर्थ और तेजी से हमला करने लायक हो। इस सोच की शुरुआत पीपुल्स लिबरेशन आर्मी एयर फोर्स के बदलावों से हुई थी। वर्ष 1991 के खाड़ी युद्ध ने हवाई ताकत के बारे में चीनी सोच पर गहरा असर डाला। बीजिंग ने देखा कि अमेरिकी सैन्य श्रेष्ठता किसी एक लड़ाकू विमान या हथियार से नहीं आई थी। यह समर्था सैटेलाइट, हवा से आरंभिक चेतावनी देने वाले विमान, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, इंटेलिजेंस, कमांड नेटवर्क और सटीक निशाना लगाने वाले हथियारों को एक साथ जोड़कर एक समन्वयक क्रियान्वयन तंत्र बनाने से मिली थी। जियांग जेमिन के दौर में, ये सबक पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के सूचना-आधारित प्रणाली की ओर अग्रसर हुए, यानी जानकारी में बढ़त और नेटवर्क से जुड़े ऑपरेशन ही युद्धक्षेत्र में असरदार होने का फैसला करेंगे। नई रणनीति में हवाई ताकत को ज्यादा अहमियत मिलने के साथ चीनी वायु सेना की संस्थागत स्थिति भी मजबूत होती गई।

शी जिनपिंग के दौर में, यह बदलाव इंटीग्रेटेड मल्टी-डोमेन ऑपरेशंस (जिसे चीन 'इंटेलिजेंटाइजेशन' कहता है) की ओर बढ़ा है यानी युद्धक्षेत्र की जानकारी को प्रोसेस करने और फैसला लेने की रफ्तार बढ़ाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑटोमेशन और एडवांस्ड कंप्यूटिंग का इस्तेमाल। चीनी हवाई ताकत का उद्भव जनरल शू किलियांग से बेहतर शायद ही किसी और अफसर की तरक्की में परिलक्षित होता हो। खुद एक फाइटर पायलट और चीनी वायुसेना के पूर्व कमांडर रहे शू, केंद्रीय सैन्य आयोग के उपाध्यक्ष बनने वाले पहले सेवा-कालिक वायुसेना अफसर बने। वर्ष 2012 से 2022 के दौरान, चीन के सैन्य आधुनिकीकरण में हवाई ताकत की भूमिका और भी अहम हो गई। पाकिस्तान के मामले में भी शू की भूमिका अहम है। वर्ष 19 में कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद, उन्होंने पाकिस्तान का दौरा किया, जहां बातचीत में हवाई ताकत के क्षेत्र में सहयोग पर विशेष जोर दिया गया। इसके बाद पाकिस्तान ने जे-10सी विमान खरीदने की प्रक्रिया तेज कर दी, जेएफ-17 कार्यक्रम के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई और कई क्षेत्रों में चीन के साथ सहयोग बढ़ाया। जे-17 इस रिश्ते की गहराई और सीमाओं दोनों को दर्शाता है।

पाकिस्तान ने एयरक्राफ्ट असेंबली, इंटीग्रेशन, मेंटेनेंस, रिपेयर और ओवरहॉल में काफी क्षमताएं विकसित की हैं, वैसे पाक कई अहम तकनीकों के लिए चीन पर निर्भर है, जिनमें एडवांस्ड इलेक्ट्रॉनिक्स, सेंसर, हथियार और खास मैटेरियल जैसे जरूरी इनपुट शामिल हैं। 'प्रोजेक्ट अज्म' का हश्र एक सबक है। 2017 में पांचवीं पीढ़ी का स्वदेशी फाइटर जेट बनाने के मकसद से शुरू की गई इस परियोजना की रफ्तार बाद में धीमी पड़ गई। ऐसे प्रोजेक्ट के लिए आवश्यक तकनीकी गहराई, संसाधन और समय बहुत ज्यादा चाहिए थे। इसकी बजाय, ध्यान आधुनिक चीनी प्रणालियां हासिल करने और उनसे जुड़े नेटवर्क को मजबूत करने पर केंद्रित हो गया। एयरबोर्न अर्ली वार्निंग एंड कंट्रोल एयरक्राफ्ट में पाक द्वारा किया गया निवेश इसका एक और उदाहरण है। अवाक्स प्रणाली राडार की रेंज बढ़ाती है, ट्रैक बनाती और कायम रखती है, तथा फाइटर जेट्स के बीच तालमेल बैठाकर हवाई युद्ध का वृहद परिदृश्य बनाने में मदद करती है। ड्रोन इसमें एक और परत जोड़ते हैं।

पाकिस्तान तुर्की और घरेलू स्तर पर बनाई प्रणालियों के साथ-साथ चीनी विंग लूंग और सीएच-सीरीज के ड्रोन इस्तेमाल करता है। निगरानी और हमले के अलावा, ये मानवरहित प्रणालियां बतौर डिकॉय (धोखा देने वाले), आसमान में लटकते विस्फोटक और इलेक्ट्रॉनिक-वॉरफेयर प्लेटफॉर्म के तौर पर भी काम कर सकती हैं। यहां तक कि सस्ते ड्रोन दुश्मन को रडार चालू कर अपनी रक्षात्मक स्थिति उजागर करने या बहुत महंगी इंटरसेप्टर मिसाइलें व्यर्थ खपाने को बाध्य कर सकते हैं। चीनी मदद से पाक ने अपनी रिमोट-सेंसिंग क्षमताओं का तेजी से विस्तार किया है, जिसमें ऑप्टिकल और सिंथेटिक-अपर्चर-रडार सैटेलाइट शामिल हैं। सितंबर 2025 में चीनी कमर्शियल स्पेस कंपनी 'पाईसैट' के साथ हुआ समझौता, जिसमें एक बड़ी राडार-इमेजिंग कॉन्स्टेलेशन (उपग्रह समूह) की योजना शामिल है, इस बात की गवाही देता है। ये निवेश एक ही मकसद की ओर इशारा करते हैं युद्धक्षेत्र की यह स्पष्ट और निरंतर तस्वीर पाने की क्षमता कि दुश्मन की सेनाएं कहां-कहां हैं, क्या हरकत हो रही है।

तनाव को मिनटों में दूर भगाएंगे ये योगासन

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव एक आम समस्या बन चुका है। काम का दबाव, डिजिटल लाइफ और नींद की कमी हमारे मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। ऐसे में योग एक प्राकृतिक और असरदार उपाय है। योग न सिर्फ शरीर को स्वस्थ रखता है बल्कि मन को भी शांति देता है। योग दिमाग में पॉजिटिव हार्मोन बढ़ाता है। नींद को बेहतर बनाता है और एंग्जायटी और डिप्रेशन को कम करता है। योगाभ्यास से फोकस और प्रोडक्टिविटी बढ़ती है। अगर आसनों का अधिक लाभ चाहिए तो शांत जगह में सुबह के समय खाली पेट योगासन करें। धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ाएं।

भुजंगासन

अगर आप भुजंगासन का नियमित अभ्यास करते हैं तो यह आपके शरीर में ऊर्जा बढ़ाता है और मूड बेहतर करता है। यह बैकबेंड आसन रीढ़ की हड्डी के तंत्रिका तंत्र को आराम देता है, जिससे मानसिक थकान तुरंत कम होती है। इस आसन के अभ्यास से शरीर में फील-गुड हार्मोन यानी एंडोर्फिन का स्तर बढ़ता है, जो मूड को बेहतर बनाता है। यह मस्तिष्क को उत्तेजित कर चिंता और हल्के अवसाद के लक्षणों को कम करने में मदद करता है।

शवासन

शवासन को सबसे रिलैक्सिंग योगासन माना जाता है। अभ्यास के लिए पीठ के बल लेट जाएं और पूरे शरीर को ढीला छोड़ दें। शवासन करने से मानसिक तनाव और चिंता कम हो सकती है। इसके नियमित अभ्यास से स्ट्रेस हार्मोन का स्तर घटता है, जिससे मन में ठहराव आता है।

पश्चिमोत्तानासन

पश्चिमोत्तानासन का नाम दो शब्दों के मेल से बना है-पश्चिम और उत्तान। पश्चिम यानी पश्चिम दिशा या शरीर का पिछला हिस्सा, और उत्तान मतलब खिचा हुआ। इस आसन के अभ्यास के लिए पैरों को सीधा रखकर आगे झुकें और पैर पकड़ें। पश्चिमोत्तानासन के अभ्यास से नर्वस सिस्टम शांत हो सकता है। ये रीढ़ की हड्डी, कंधों और हॅम्स्ट्रिंग में खिचाव लाता है। जिगर, गुर्दे, अंडाशय, और गर्भाशय की कार्यक्षमता में सुधार लाता है। पाचन अंगों की कार्यक्षमता में सुधार करता है।

बालासन

यह आसन शरीर और मन दोनों को आराम देता है। इसके अभ्यास के लिए घुटनों के बल बैठकर शरीर को आगे झुकाएं और माथा जमीन पर रखें। इस आसन का अभ्यास दिमाग को तुरंत शांत करता है और और थकान दूर करता है। यह आसन आपके पैरासिम्पेथेटिक नर्वस सिस्टम को सक्रिय करता है, जिससे कोर्टिसोल (तनाव हार्मोन) का स्तर कम होता है। आगे झुककर माथा जमीन पर टिकाने से दिमाग को सुरक्षा का अहसास होता है, जिससे चिंता और मानसिक थकान तुरंत कम होती है।

सुखासन

इस आसन के नियमित अभ्यास से ध्यान लगाने में मदद मिलती है और सुखासन मानसिक शांति देता है। जो लोग छोटी-छोटी बातों पर घबरा जाते हैं, उनके लिए गहरी सांसों के साथ सुखासन करना एक वरदान है? मन शांत होने से हृदय गति सामान्य होती है और बढ़ा हुआ रक्तचाप कम होता है? यह दिमाग की थकान मिटाकर मानसिक स्पष्टता और फोकस को बेहतर बनाता है।

अनुलोम-विलोम

यह प्राणायाम सांसों को नियंत्रित करता है। इसके अभ्यास के लिए एक नाक से सांस लें और दूसरी से छोड़ें। यह आसन दिमाग को शांत और फोकस्ड बनाता है। नाक के बाएं छिद्र और दाएं छिद्र से सांस लेने से दिमाग के दोनों हिस्से संतुलित होते हैं।

भ्रामरी प्राणायाम

इस प्राणायाम के अभ्यास के दौरान मधुमक्खी की आवाज के साथ सांस छोड़ी जाती है। भ्रामरी प्राणायाम करने से तुरंत तनाव और गुस्सा कम हो सकता है। यह मन के विचारों को थामकर आंतरिक शांति और धैर्य को बढ़ावा देता है। रात को सोने से पहले इसे करने से दिमाग शांत होता है और अनिद्रा की समस्या दूर होती है। तनाव के कारण बढ़ने वाले हाई ब्लड प्रेशर और दिल की धड़कन को यह सामान्य बनाए रखता है। यह प्राणायाम शरीर में तनाव बढ़ाने वाले हार्मोन कॉर्टिसोल के स्तर को कम करता है। इसके अभ्यास से शरीर का रेस्ट एंड डाइजेस्ट मोड एक्टिव होता है, जिससे तुरंत मानसिक सुकून मिलता है। यदि तनाव के कारण आपको बार-बार गुस्सा या बेचैनी होती है, तो यह उसे पूरी तरह शांत करता है।

हंसना मना है

टीचर पप्पू से: बताओ सबसे नशीला पदार्थ कौन सा होता है? पप्पु: किताब है सर, साला खोलते ही नींद आ जाती है।

बच्चा मेडीकल वाले से: अंकल, गोरा करने वाली कोई क्रीम है? मेडिकल वाला: हां है.. शरारती बच्चा: तो उसे चेहरे पर लगाता क्यों नहीं? रोज तेरा मुंह देखकर डर जाता हूं!

डॉक्टर: पप्पु अब तुम्हारी पत्नी कैसी है? पप्पु: अब काफी सुधार है उसकी तबियत में, आज सुबह तो थोड़ी बहुत लड़ाई भी की उसने।

2 हफ्तों से ज्यादा खासी टीबी बन जाती है.. अगर टाइम पे गर्लफ्रेंड ना चेंज करो तो वो बीबी बन जाती है।

गर्लफ्रेंड: मेरी याद आती है तो तुम क्या करते हो? बॉयफ्रेंड: तुम्हारी पसंदीदा चाकलेट खा लेता हूं। और तुम क्या करती हो मेरी याद आये तब, गर्लफ्रेंड: मैं भी 'विमल' खा लेती हूं।

जितना गौर से लोग टकराने के बाद एक दूसरे को देखते हैं, उतनी गौर से अगर पहले ही देख लें, तो टक्कर ही नहीं होती।

कहानी | मूर्ख कौआ और चालाक लोमड़ी

एक बार की बात है स्वामी विवेकानंद मंदिर में दर्शन करने के बाद प्रसाद लेकर बाहर निकले। कुछ देर आगे चलने के बाद स्वामी के घर के रास्ते में उन्हें कुछ बंदरों ने घेर लिया। स्वामी थोड़ा आगे बढ़ते और वो बंदर उन्हें काटने को आते। काफी देर तक स्वामी विवेकानंद ने आगे जाने की कोशिश की, लेकिन वो ऐसा कर न पाए। आखिर में स्वामी विवेकानंद वहां से वापस मंदिर की ओर लौटने लगे। उनके हाथ से प्रसाद की थैली को छीनने के लिए बंदरों की टोली भी उनके पीछे भागने लगी। स्वामी डर गए और वो भी डलमर के मारे दौड़ने लगे। दूर से मंदिर के पास बैठा एक बूढ़ा सन्यासी सब कुछ देख रहा था। उसने स्वामी को भागने से रोका और कहा, बंदरों से डरने की जरूरत नहीं है। तुम इस डर का सामना करो और फिर देखो क्या होता है। स्वामी विवेकानंद संन्यासी की बात सुनकर वहां ठहरे और बंदरों की तरफ मुड़ गए। अपनी तरफ तेजी से बंदरों का आता देखकर स्वामी भी उनकी तरफ उतनी ही तेजी से बढ़ने लगे। बंदरों ने जैसे ही स्वामी विवेकानंद को अपनी तरफ आता देखा, तो वो डरकर भागने लग गए। अब बंदर आगे-आगे भाग रहे थे और स्वामी जी बंदरों के पीछे-पीछे। कुछ ही देर में सभी बंदर उनके रास्ते से हट गए। इस तरह स्वामी विवेकानंद ने अपने डर पर जीत हासिल की। फिर वो लौटकर उसी संन्यासी के पास गए और उनको इतनी बड़ी बात सिखाने के लिए धन्यवाद कहा।

कहानी से सीख- कहते हैं कि हर किसी की जिंदगी में ऐसा पल जरूर आता है जब उसे किसी-न-किसी वजह से डर लगने लगता है। खास कर कोई भी चीज डर का कारण तब तक बनी रहती है, जब तक हम उससे डरते हैं। इसी वजह से डर से डरने की जगह उसका सामना करना चाहिए। ऐसा करने से डर भाग जाता है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद् हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

कार्यस्थल पर अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, नए दायित्व प्राप्त हो सकते हैं। व्यापार में विस्तार की योजनाएं बनेंगी। दूर की यात्रा संभव है। पर्याप्त नींद लें।

वृषभ

दफ़्तर में मान-सम्मान बढ़ेगा सीनियर्स काम से प्रसन्न रहेंगे। कार्यशैली में सुधार होगा। कारोबारी हैं तो व्यापारिक लाभ के अवसर मिलेंगे, नए सौदे लाभदायक रहेंगे।

मिथुन

कार्यस्थल पर बुद्धिमत्ता व संवाद कौशल से जटिल कार्य आसानी से पूरे होंगे। कारोबारी हैं तो नेटवर्किंग से व्यावसायिक लाभ होगा। नए ऑर्डर मिल सकते हैं।

कर्क

कार्यस्थल पर स्थिति नियंत्रण में रहेगी। वरिष्ठों का समर्थन मिलेगा। लंबित कार्य पूरे होंगे। कारोबारी हैं तो दूरदराज या विदेश से जुड़ा व्यापार लाभ देगा।

सिंह

दफ़्तर की राजनीति से दूर रहकर अपने काम पर फोकस करें। काम में सतर्कता बरतें। कारोबारी हैं तो बड़ा निवेश या जोखिमभरा सौदा टालना हितकर रहेगा।

कन्या

कार्यस्थल पर सहकर्मियों के साथ समन्वय अच्छा रहेगा। सराहना मिलेगी। कारोबारी हैं तो व्यापार में वृद्धि होगी। पुराने ग्राहकों से लाभ मिलेगा।

तुला

कार्यस्थल पर काम का दबाव रहेगा, लेकिन समय पर जिम्मेदारियां पूरी होंगी। कारोबार में लेनदेन या कर्ज से जुड़े मामले सुलझेंगे। प्रेम जीवन में छोटी बातों पर राई का पहाड़ न बनाएं।

वृश्चिक

बौद्धिक व रचनात्मक क्षमता से कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। नई जिम्मेदारी मिल सकती है। कारोबारी हैं तो शेयर बाजार व कंसल्टेंसी क्षेत्र से जुड़े लोगों को लाभ होगा।

धनु

कार्यस्थल पर शांति बनाए रखें। काम और घरेलू जिम्मेदारियों में तालमेल बिठाना आवश्यक होगा। कारोबारी हैं तो प्रॉपर्टी या रियल एस्टेट से जुड़े कामों में लाभ होगा।

मकर

कार्यस्थल पर आत्मविश्वास और पराक्रम से कठिन काम भी आसानी से बनेंगे। करियर को नई गति मिलेगी। कारोबार में छोटी व्यापारिक यात्राएं लाभप्रद और फलदायी रहेंगी।

कुम्भ

कार्यस्थल पर वाणी की सौम्यता और सही रणनीति से सफलता मिलेगी। कारोबारी हैं तो व्यावसायिक फैसलों से धन लाभ होगा। नया सौदा फाइनल हो सकता है।

मीन

कार्यक्षेत्र में प्रभाव बढ़ेगा। निर्णय क्षमता मजबूत होगी। नई पहचान बनेगी। कारोबार में नए बिजनेस मॉडल पर काम शुरू करने के लिए दिन अनुकूल है।

फिल्म घातक घुस के मारेगा में होगी सनी देओल की इंट्री!

साल 1996 में रिलीज हुई फिल्म घातक सनी देओल की सबसे ज्यादा मशहूर फिल्मों में से एक है। अब इसी तर्ज पर एक और नई फिल्म बनने वाली है। जिसका नाम घातक घुस के मारेगा होगा। फिल्म निर्माता राजकुमार संतोषी ने कहा कि वह अपनी अपकमिंग फिल्म घातक घुस के मारेगा के लिए सनी देओल के साथ फिर से जुड़ने के लिए तैयार हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इसमें बॉलीवुड स्टार उनकी 90 के दशक की मशहूर एक्शन फिल्म घातक जैसा ही किरदार निभाएंगे।

निर्देशक और अभिनेता की जोड़ी ने हाल ही में रिलीज हुई बंटवारे पर बनी फिल्म बंटवारा 1947 में साथ काम किया, जिससे 30 साल बाद उनकी वापसी हुई। 90 के दशक में उन्होंने घायल, दामिनी और घातक जैसी बॉक्स ऑफिस हिट फिल्में दी थीं। संतोषी ने बातचीत में कहा सनी और मैं कुछ कहानियों पर काम कर रहे हैं और जल्द ही हम इसके बारे में औपचारिक घोषणा करेंगे। फिल्म में भरपूर एक्शन है। इसका नाम घातक घुस के मारेगा है। यह कोई सीक्वल नहीं है। लेकिन इसमें किरदार वही है।

संतोषी ने आगे कहा सनी के फैंस खुश होंगे क्योंकि इस नई फिल्म में एक्शन, दमदार डायलॉग और इमोशन हैं। इस फिल्म के अलावा, सनी के साथ दो-तीन और कहानियां भी पाइपलाइन में हैं। उदाहरण के लिए, एक फिल्म में सनी अमेरिका में एक सरदार की भूमिका में हैं, जो एक एक्शन-ड्रामा भी है। राजकुमार संतोषी की 1996 की एक्शन-ड्रामा फिल्म घातक एक ईमानदार आदमी की कहानी है। इसकी कहानी और डायलॉग भी राजकुमार संतोषी ने ही लिखे थे। इसमें सनी देओल के अलावा मीनाक्षी शेषाद्रि, डैनी, अमरीश पुरी, मुकेश ऋषि और केके रैना थे।

6.25 करोड़ रुपये में बनी इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 32.7 करोड़ रुपये कमाए थे। 14 अगस्त को रिलीज हुई फिल्म बंटवारा 1947 में सनी देओल, प्रीति जिंटा, करण देओल, अली फजल और अभिमन्यु सिंह थे। इसे आमिर खान प्रोडक्शंस ने प्रोड्यूस किया है। बॉक्स ऑफिस पर यह फिल्म अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई।

फिल्म 'की एंड का' में नजर आ सकती हैं कियारा आडवाणी

कियारा आडवाणी इन दिनों अपनी फिल्म 'टॉक्सिक' को लेकर लगातार चर्चा में हैं। यश के साथ इस फिल्म में उनके किरदार और बोल्ड अंदाज ने खूब ध्यान खींचा है। इसी बीच उनकी अगली फिल्म को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही है।

बॉलीवुड में इन दिनों पुरानी फिल्मों के सीक्वल और फ्रेंचाइजी फिल्मों का दौर चल रहा है। इसी कड़ी में अब साल 2016 में रिलीज हुई फिल्म 'की एंड का' का नाम भी जुड़ गया है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, मेकर्स करीब 10 साल बाद 'की एंड का 2' बनाने की तैयारी कर रहे हैं। खास बात यह है कि फिल्म की कहानी पिछली फिल्म की कहानी को आगे नहीं बढ़ाएगी। इसके बजाय 'की' और 'का' नाम के किरदारों को रखते हुए एक बिल्कुल नई कहानी दिखाई जाएगी। बताया जा रहा है कि फिल्म में 'की' के किरदार के लिए कियारा आडवाणी से संपर्क किया गया है। कियारा ने भी इस प्रोजेक्ट में दिलचस्पी दिखाई है। हालांकि, अभी उन्होंने फिल्म साइन नहीं की है। वहीं, फिल्म में 'का' का किरदार निभाने वाले एक्टर की तलाश अभी जारी है। मेकर्स कियारा के साथ स्क्रीन शेयर करने के लिए एक सही अभिनेता की तलाश कर रहे हैं।

बता दें कि 'की एंड का' साल 2016 में रिलीज हुई थी। फिल्म में करीना कपूर और अर्जुन कपूर लीड रोल में नजर आए थे। फिल्म की कहानी काफी अलग थी, जिसमें एक शादीशुदा कपल के जरिए पुरुष और महिला की पारंपरिक भूमिकाओं को उलटकर दिखाया गया था। फिल्म का निर्देशन आर. बाल्की ने किया था।

फिल्म में अर्जुन कपूर ने एक ऐसे पति का किरदार निभाया था, जो घर संभालता है, जबकि करीना कपूर का किरदार नौकरी और करियर पर ध्यान देता है। फिलहाल 'की एंड का 2' को लेकर आधिकारिक ऐलान नहीं हुआ है। मेकर्स फिल्म की कास्टिंग और प्री-प्रोडक्शन पर काम कर रहे हैं। अगर सब कुछ योजना के मुताबिक रहा, तो फिल्म की शूटिंग इस साल के अंत तक शुरू हो सकती है।

बॉलीवुड | मन की बात

स्टार किड्स के लिए फिल्म इंडस्ट्री में सब कुछ आसान नहीं होता : अरशद

बॉलीवुड में नेपोटिज्म की बहस कोई नई नहीं है, लेकिन जब भी इसका जिक्र होता है, कंगना रनौत का नाम जरूर सामने आता है। अब एक्टर अरशद वारसी ने भी इसी मुद्दे पर अपनी राय रखी है। उन्होंने कहा कि नेपोटिज्म का आइडिया कंगना रनौत ने सामने रखा था, जो बाद में एक बड़ा मुद्दा बन गया। हालांकि, अरशद ने यह भी कहा कि स्टार किड्स के लिए फिल्म इंडस्ट्री में सबकुछ आसान नहीं होता। उनके इस बयान ने एक बार फिर बॉलीवुड में नेपोटिज्म की पुरानी बहस को चर्चा में ला दिया है। बॉलीवुड में नेपोटिज्म की बहस कोई नई बात नहीं है, लेकिन जब भी इसका जिक्र होता है तो एक्ट्रेस कंगना रनौत का नाम जरूर आता है। अब एक्टर अरशद वारसी ने भी इसी मुद्दे पर अपनी राय रखी है। उन्होंने कहा कि नेपोटिज्म का आइडिया कंगना ने सामने रखा था, जो बाद में एक बड़ा मुद्दा बन गया। एक्टर अरशद वारसी हाल ही में फिल्मीज्ञान के एक पॉडकास्ट में पहुंचे, जहां उनसे नेपोटिज्म पर सवाल पूछा गया तो उन्होंने खुलासा किया कि जब उन्होंने अपने करियर की शुरुआत की थी, तब नेपोटिज्म कोई मुद्दा ही नहीं था। अरशद के मुताबिक, कंगना रनौत ने सबसे पहले नेपोटिज्म का विचार सामने रखा और इसके बाद ही यह एक बहुत बड़ी बहस बन गई, जिस पर हर कोई बात करने लगा। हालांकि, अरशद ने साफ किया कि नेपोटिज्म के होने से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि वे मानते हैं कि अंततः केवल आपकी प्रतिभा ही यह तय करती है कि आप इस इंडस्ट्री में कितनी दूर जाएंगे। स्टार किड्स का पक्ष लेते हुए अरशद वारसी ने कहा कि उनके लिए चीजें उतनी आसान नहीं होतीं, जितना लोग समझते हैं, क्योंकि उन पर दर्शकों की उम्मीदों का भारी दबाव होता है। अरशद ने कहा कि लोगों को लगता है कि वे एक स्टार के बच्चे हैं, इसलिए उन्हें बेहतरीन कलाकार होना ही चाहिए। अरशद ने माना कि यह दबाव वह आज अपने खुद के बच्चों के संदर्भ में भी महसूस करते हैं। उन्होंने समझाया कि स्टार किड होने का अधिकतम फायदा यह है कि उनके लिए किसी फिल्म के दरवाजे जल्दी खुल सकते हैं, लेकिन यदि उनके पास प्रतिभा नहीं है, तो वे दरवाजे उतनी ही तेजी से बंद भी हो जाते हैं।

यहां सिर्फ 1 रुपये में मिलता है भरपेट नाश्ता, सुबह-सुबह लग जाती है भीड़

भारत में महंगाई दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं, दूध-दही महंगे हो गए हैं और बाहर खाने का ख्याल भी जेब पर भारी पड़ता है। ऐसी स्थिति में अगर कोई कहे कि मात्र एक रुपये में भरपेट नाश्ता मिल सकता है तो शायद आपको यकीन ना हो। लेकिन यह सच्चाई है। देश के एक कोने में पिछले 25 साल से एक शख्स लोगों को सिर्फ एक रुपये में स्वादिष्ट और भरपेट नाश्ता परोस रहा है। सुबह-सुबह यहां इतनी भीड़ लग जाती है कि दूर-दूर से लोग लाइन में खड़े हो जाते हैं। इस अनोखी पहल के पीछे हैं राम बाबू अन्ना, जिन्हें लोग प्यार से अन्ना जी कहते हैं। सोशल मीडिया पर इन दिनों उनकी कहानी खूब वायरल हो रही है। वीडियो और पोस्ट्स में लोग लिख रहे हैं। भारत का सबसे सस्ता नाश्ता, 25 साल से सिर्फ 1 में पेट भर जाता है और ये है असली हीरो। कुछ लोग बिजनेस सिर्फ प्रॉफिट के लिए करते हैं, लेकिन राम बाबू अन्ना ने इसे समाज सेवा का रूप दे दिया है। उनकी कहानी प्रेरणा देने वाली है और आज के समय में बहुत जरूरी भी। राम बाबू अन्ना का सफर आसान नहीं रहा। लगभग 25 साल पहले जब उन्होंने यह काम शुरू किया था तब हालात बहुत मुश्किल थे। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। उन्होंने देखा कि आसपास के कई गरीब मजदूर, रिक्शा वाले, छोटे दुकानदार और छात्र सुबह भूखे पेट काम या पढ़ाई के लिए निकलते हैं। कई बार पैसे की कमी के कारण वे नाश्ता छोड़ देते थे। यही देखकर उनके मन में एक विचार आया। क्यों ना कम कीमत पर अच्छा नाश्ता उपलब्ध कराया जाए ताकि कोई भूखा ना रहे। शुरुआत में उन्होंने बहुत छोटे स्तर पर काम किया। थोड़ी सी जगह किराए पर ली या घर के पास ही व्यवस्था की। इडली, उपमा, पोहा या स्थानीय स्वाद के अनुसार सादा लेकिन पौष्टिक नाश्ता बनाना शुरू किया। कीमत रखी सिर्फ एक रुपये। कई लोगों ने उन्हें पागल कहा। लेकिन ये शुरुआत आज 25 साल बाद भी जारी है। शुरुआत में नुकसान के बाद भी राम बाबू अन्ना अपने इस फैसले पर अडिग रहे। उन्होंने कहा कि मकसद कमाई नहीं, लोगों की सेवा है। एक रुपये इसलिए रखा ताकि लोगों को इज्जत के साथ खाने का अहसास रहे। मुफ्त में देने पर कई बार लोग शर्म महसूस करते हैं या गुणवत्ता पर शक करते हैं। एक रुपये की कीमत से गरिमा बनी रहती है।

अजब-गजब | यहां सदियों से चली आ रही है यह परंपरा

इस देश में होता है मशीनों का अंतिम संस्कार!

दुनिया भर में अंतिम संस्कार या विदाई समारोह आमतौर पर इंसानों के लिए होते हैं। परिवार और दोस्त इकट्ठा होते हैं, श्रद्धांजलि देते हैं और अंतिम विदाई देते हैं। लेकिन क्या आपने कभी मशीनों का अंतिम संस्कार देखा या सुना है? जापान में यह अनोखी और भावुक परंपरा सदियों से चली आ रही है। यहां फैक्ट्री या कारखाने में 20 से 30 साल या उससे ज्यादा समय तक ईमानदारी से काम करने वाली मशीनों को हटाने से पहले पूरा सम्मान दिया जाता है। कर्मचारी मशीन के सामने सिर झुकाते हैं, मौन रखते हैं और उसके वर्षों के योगदान के लिए धन्यवाद कहते हैं।

आज के समय में ज्यादातर जगहों पर जब कोई मशीन पुरानी हो जाती है, खराब हो जाती है या नई तकनीक आ जाती है तो उसे सीधे हटाकर कबाड़ या रीसाइक्लिंग में भेज दिया जाता है। मशीनों से कोई विशेष भावना नहीं जुड़ी होती। लेकिन जापान की कुछ कंपनियों और कारखानों में यह रवैया बिल्कुल अलग है। वहां मशीन को सिर्फ लोहा-लकड़ी या धातु का ढांचा नहीं माना जाता। उसे एक साथी, एक सहयोगी की तरह देखा जाता है जिसने सालों तक उत्पादन में अहम भूमिका निभाई है। इस वजह से उन्हें सम्मानजनक विदाई दी जाती है। यह परंपरा जापानी संस्कृति की गहरी जड़ों से जुड़ी है। शिंटो धर्म और एनिमिज्म की अवधारणा में माना जाता है कि

वस्तुओं में भी आत्मा या कामि (आध्यात्मिक शक्ति) हो सकती है। पुरानी चीजों, औजारों और मशीनों के प्रति सम्मान का भाव मोनो ओ ताइसेत्सु नि सुरु यानी चीजों को महत्व देना कहलाता है। कृतज्ञता यानी कांशा जापानी समाज का महत्वपूर्ण मूल्य है। इसलिए जो मशीन दशकों तक बिना शिकायत काम करती रही, उसे विदाई देते समय धन्यवाद व्यक्त करना स्वाभाविक लगता है। समारोह का तरीका आमतौर पर सरल लेकिन गंभीर होता है। मशीन को हटाने से पहले कर्मचारी इकट्ठा होते हैं। कभी-कभी पुराने मैनेजर या वरिष्ठ व्यक्ति शिंटो शुद्धिकरण अनुष्ठान (ओहराई या कियोहराई) करते हैं। धूप या कुछ पारंपरिक रीति-रिवाज निभाए जाते हैं। फिर सब लोग मशीन के सामने झुकते हैं। दो झुकना, दो ताली और एक झुकना जैसी पारंपरिक शैली भी अपनाई जाती है। कुछ पल मौन रखा जाता है। कर्मचारी मशीन के योगदान को याद करते हैं। कितने प्रोडक्ट बनाए, कितनी मेहनत आसान की, कितने साल साथ दिया। फिर नई मशीन लगाने की तैयारी होती है।

हाल के वर्षों में ऐसे कई उदाहरण सामने आए हैं। टोट्टोरी प्रांत के एक आयरनवर्क्स में दो मशीनें 30 और 37 साल तक काम करने के बाद हटाई जा रही थीं। 92 वर्षीय पूर्व फैक्ट्री मैनेजर ने शुद्धिकरण अनुष्ठान किया। कर्मचारी झुके और धन्यवाद दिया। कुछ की आंखें नम हो गईं। सोशल मीडिया पर यह वीडियो वायरल हुआ तो दुनिया भर के लोग भावुक हो गए। कई ने लिखा कि यह सम्मान की सच्ची मिसाल है। पचिंको मशीनों के लिए भी मंदिरों में औपचारिक अंतिम संस्कार जैसे समारोह होते रहे हैं। बौद्ध भिक्षु मंत्र पढ़ते हैं, धूप जलाते हैं और मशीनों के आत्मा को विदाई देते हैं। सोनी के एआईबीओ रोबोट कुत्तों के लिए भी मंदिर में अंतिम संस्कार आयोजित किए गए जब वे रिपेयर के लायक नहीं रहे। मालिक पत्र लिखकर भेजते थे और समारोह के बाद पार्ट्स का इस्तेमाल होता था। ये उदाहरण दिखाते हैं कि परंपरा सिर्फ औद्योगिक मशीनों तक सीमित नहीं, बल्कि रोजमर्रा की चीजों तक फैली हुई है। सुई-धागे की टूटी सुइयों के लिए हरि कुयो समारोह सदियों से होता आ रहा है। महिलाओं और दर्जियों की पुरानी सुइयों को टोफू या नरम चीज में गाड़कर आराम देने का रिवाज है ताकि वे दर्द ना महसूस करें। गुड़ियों और खिलौनों के लिए भी कुयो होते हैं।

भागवत के बयान पर मचा घमासान

» भागवत ने की विदेश में विविधता की बात, भारत में क्यों नहीं : सिब्बल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

संघ प्रमुख पर राज्य सभा सांसद का सवाल

नई दिल्ली। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के न्यूयॉर्क में विविधता में एकता पर दिए भाषण पर कपिल सिब्बल ने सवाल उठाए हैं। उन्होंने तंज कसते हुए पूछा कि क्या यह भागवत का भाषण था या राहुल गांधी का। सिब्बल ने आरोप लगाया कि विदेश में विविधता की बात करने वाले आरएसएस प्रमुख भारत में इस पर चुप रहते हैं। न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के संबोधन के बाद भारत में नई सियासी बहस शुरू हो गई है। भाजपा के कई नेता जहां उनके भाषण की तारीफ कर रहे हैं और समर्थन में खड़े हैं, वहीं कांग्रेस ने भागवत की टिप्पणियों को लेकर सवाल उठाए हैं।

राज्यसभा सांसद और वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने भागवत के 'विविधता में एकता' वाले बयान पर निशाना साधा है। कपिल सिब्बल ने मोहन भागवत के भाषण पर तंज कसते हुए कहा कि उनकी बातें सुनकर उन्हें लगा कि यह राहुल गांधी का भाषण है या आरएसएस प्रमुख का। सिब्बल ने कहा कि विदेश में विविधता को स्वीकार करने की बात की जाती है, लेकिन भारत में इसी भावना को लेकर सवाल खड़े होते हैं। उन्होंने सवाल किया कि अगर विदेश में विविधता को स्वीकार किया जाता है तो अपने देश में विविधता को क्यों बर्दाश्त नहीं किया जाता? कपिल सिब्बल ने आरोप लगाया कि मोहन भागवत ऐसी राजनीति का समर्थन करते हैं, जो उनके मुताबिक विविधता को स्वीकार, सम्मान और संरक्षित नहीं करती। उन्होंने कहा कि न्यूयॉर्क में एक अलग दर्शक वर्ग के सामने अलग संदेश दिया जा रहा है। इसी को लेकर उन्होंने भागवत के विदेश में दिए गए भाषण और भारत की राजनीति में उनके रुख के बीच अंतर पर सवाल उठाए।

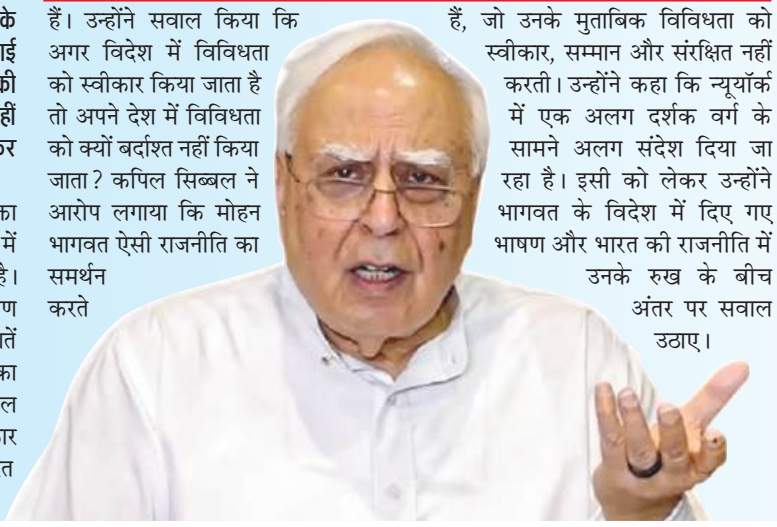

सिब्बल ने मॉब लिंचिंग का भी उठाया मुद्दा

सिब्बल ने कहा कि जब मोहन भागवत न्यूयॉर्क में भारत के लोगों के एक-दूसरे के प्रति संवेदना और एकता की बात कर रहे थे, तो उन्हें राहुल गांधी के बयानों की याद आ गई। उन्होंने मॉब लिंचिंग जैसी घटनाओं का जिक्र करते हुए सवाल किया कि जब भारत में ऐसी घटनाएं होती हैं, तब क्या लोगों के प्रति वही संवेदना दिखाई जाती है, जिसकी बात विदेश में की जा रही है? कपिल सिब्बल ने राम मंदिर के उद्घाटन और रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि हिंदू और राम भक्त होने पर गर्व किया जा सकता है, लेकिन जो लोग विविधता के सम्मान की बात करते हैं, उन्हें मंदिर निर्माण से पहले हुई घटनाओं पर भी बोलना चाहिए। सिब्बल ने मोहन भागवत के भाषण में इस्तेमाल किए गए चार शब्दों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि भागवत ने विविधता का जश्न मनाने, सम्मान करने, स्वीकार करने और संरक्षण की बात कही। इसके बाद सिब्बल ने सवाल किया कि भारत में जब विविधता कथित तौर पर खतरे में होती है, तब आरएसएस प्रमुख ने कितनी बार इसके खिलाफ आवाज उठाई?

भागवत के हिंदू-मुस्लिम बयान पर शिवसेना नेता शायना एनसी ने जताई सहमति

शिवसेना नेता शायना एनसी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत के उस बयान का स्वागत किया जिसमें उन्होंने कहा था कि जो हिंदू मुसलमानों को बाहर रखने की वकालत करता है, वह हिंदू नहीं रह जाता। भागवत ने इसे 'किसी का तुष्टीकरण नहीं करने और सबके लिए न्याय' का स्पष्ट संकेत बताया। संघ प्रमुख ने न्यूयॉर्क में 'थन वर्ल्ड- थन ह्यूमैनिटी फेथ लीडर्स समिट' को संबोधित करते हुए कहा कि अगर कोई हिंदू यह सोचता है कि भारत में मुसलमान नहीं होने चाहिए, तो वह हिंदू नहीं रह जाता। उन्होंने कहा, आरएसएस के तौर पर हम मानते हैं - क्योंकि हमें यह जानकारी है कि दुनिया की मानवता एक है, ऐसे में पूरी दुनिया में जाकर सबको यह बताना हमारा कर्तव्य है कि विविधताओं के बावजूद हम एक हैं। शिवसेना नेता ने कहा कि हिंदू धर्म की मूल विचारधारा सबको साथ लेकर चलने पर आधारित है और भारत की पारंपरिक सोच ने हमेशा अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और उन्हें साथ लेकर चलने की गारंटी दी है। उन्होंने कहा, न्यूयॉर्क में मोहन जी भागवत ने जो कहा, वह इस बात का साफ संकेत है कि न्याय सबके लिए होगा और किसी का तुष्टीकरण नहीं होगा। हां, भारत में बेशक हिंदुओं की प्रधानता है, लेकिन पारंपरिक रूप से भारत हमेशा से ही अल्पसंख्यकों के लिए सुरक्षित जगह रहा है।

जिस देश से बाबर आया वहीं से मिला सम्मान : ओवैसी

» मोदी को उज़्बेकिस्तान के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पर पर कसा तंज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हैदराबाद। एआईएमआईएम के अध्यक्ष और हैदराबाद से सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उज़्बेकिस्तान से मिले सर्वोच्च राजकीय सम्मान को लेकर भारतीय जनता पार्टी और संघ परिवार पर बड़ा राजनीतिक हमला बोला है। ओवैसी ने कहा कि प्रधानमंत्री को उसी धरती से सम्मान मिला है, जहां से मुगल सम्राट बाबर भारत आया था। उन्होंने सवाल उठाया कि अब बीजेपी विपक्ष पर निशाना साधने के लिए बाबर के नाम का इस्तेमाल कैसे करेगी। उज़्बेकिस्तान के सर्वोच्च राजकीय सम्मान ओली दराजली दोस्तलिक से सम्मानित होने पर प्रतिक्रिया देते हुए ओवैसी ने बीजेपी औरसंघ को आत्ममंथन करने की सलाह दी।

सांसद ने कहा, मैं उनको बधाई देता हूं जिस देश से बाबर भारत आया था, उसी देश ने प्रधानमंत्री को पुरस्कार दिया है। ओवैसी ने बताया कि बाबर मौजूदा उज़्बेकिस्तान की फरगना घाटी का रहने वाला था और कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के लिए अपनी विदेश यात्राओं के दौरान सम्मान पाना एक आम बात हो गई है। ओवैसी ने कहा, आजकल प्रधानमंत्री जहां भी जाते हैं, वहां से पुरस्कार लेकर ही लौटते हैं। बधाई हो सपा प्रमुख ने राजनीतिक चर्चाओं में बाबर का जिक्र किए जाने को लेकर बीजेपी और व्यापक संघ परिवार पर भी निशाना साधा। सांसद ने आगे कहा, आप बाबर के नाम पर इतनी बुराई करते थे, फिर भी उसी देश के लोग अब आपको पुरस्कार से सम्मानित कर रहे हैं। ओवैसी ने कहा कि इस घटनाक्रम से आरएसएस और उसके समर्थकों को आत्म-मंथन करना चाहिए। उन्होंने पूछा, संघ को इस पर विचार करने की ज़रूरत है। आप बाबर का नाम लेकर हमें बुरा-भला कहते थे। और अब आपको उसी जगह से नागरिक सम्मान दिया गया है जहाँ से बाबर आया था। हमें उम्मीद है कि संघ परिवार के लोग और आरएसएस का समर्थन करने वाले लोग अब बाबर का नाम इस तरह नहीं लेंगे, क्योंकि फरगना घाटी उज़्बेकिस्तान में ही है।

बसपा की उप्र विस-27 की तैयारी शुरू

» पार्टी सुप्रीमो मायावती ने जिलाध्यक्षों और पदाधिकारियों के साथ की चर्चा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में बसपा सुप्रीमो मायावती ने आगामी उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर सोमवार को पार्टी की महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक में प्रदेश के सभी राज्य स्तरीय पदाधिकारी और सभी 75 जिलों के जिलाध्यक्ष शामिल हुए। इसमें दिवंगत विधायक उमाशंकर सिंह के बेटे युकेश भी उपस्थित रहे। बैठक में मायावती ने पिछली बैठकों में पार्टी पदाधिकारियों को दिए गए निर्देशों के अनुपालन की जानकारी ली।

उन्होंने संगठन की तैयारियों और जमीनी स्तर पर पार्टी की गतिविधियों की भी समीक्षा की। बैठक के दौरान आगामी विधानसभा चुनाव के लिए संभावित उम्मीदवारों के नामों पर भी चर्चा की गई। माना जा रहा है कि मायावती ने पदाधिकारियों से चुनाव को लेकर संगठन की तैयारियों और क्षेत्रवार स्थिति की जानकारी भी ली। वहीं चुनाव से पहले महिलाओं व अन्य वर्गों को निजी लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं, लुभावने वादों और घोषणाओं के जरिये चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है। उन्होंने कार्यकर्ताओं और जनता को ऐसे वादों से सावधान रहने की अपील की। सरकार बनने पर वादाखिलाफी की शिकायतें सामने आती हैं। जनता को विरोधी दलों के छलावे और विश्वासघात से बचते हुए अपने विवेक से मतदान करना चाहिए।

सभी धर्म महान, कोई बुरा नहीं : बसवराज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। कर्नाटक के मंत्री बसवराज रायरेड्डी ने सोमवार को इस्लाम की तारीफ में दिए गए अपने हालिया बयानों का बचाव किया। उन्होंने कहा कि इस्लाम को महान धर्म बताने में कुछ भी गलत नहीं है और जोर देकर कहा कि उनका मकसद यह कहना नहीं था कि कोई दूसरा धर्म कमतर है। रायरेड्डी ने पहले कहा था कि इस्लाम दुनिया का सबसे वैज्ञानिक और महान धर्म है। मेरी इच्छा है कि मैं कम से कम एक बार हज यात्रा पर जाऊँ। अपनी बात साफ़ करते हुए रायरेड्डी ने कहा कि उन्होंने इस्लाम की कुछ ऐसी खूबियों और आदर्शों के बारे में बात की थी जिनकी वे तारीफ़ करते हैं, और उनके बयानों का मतलब दूसरे धर्मों की आलोचना नहीं निकाला जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि यह कहने में क्या गलत है कि इस्लाम एक महान धर्म है? मैंने कहा था कि इस्लाम में कुछ महान मूल्य और आदर्श हैं। मैंने यह नहीं कहा कि कोई दूसरा धर्म कमतर है। मैंने बस इतना कहा कि इस्लाम में कुछ तारीफ़ के काबिल खूबियां हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि मैंने दूसरे धर्मों को बुरा कहा। रायरेड्डी ने कहा कि सभी धर्म महान हैं और किसी खास संदर्भ में एक धर्म की खूबियों पर चर्चा करने का मतलब दूसरे धर्मों का अपमान करना नहीं है। उन्होंने कहा कि सभी धर्म महान हैं। अगर मैंने ऐसा कहा, तो इसमें क्या गलत है? इस तरह की चर्चा प्रेस के लिए अच्छी नहीं है। हम संदर्भ के हिसाब से धर्मों के बारे में बात करते हैं। हर धर्म महान है। ऐसा कहने में क्या बुराई है? कोई भी धर्म बुरा नहीं है। इससे पहले, मंत्री ने कहा था कि वे अक्सर मठों और मंदिरों में नहीं जाते, लेकिन सभी धर्मों की शिक्षाओं का सम्मान करने में विश्वास रखते हैं। उन्होंने कहा कि इस्लाम मानवता से भरा एक महान धर्म है। लेकिन समाज में इस्लाम के बारे में गलत धारणाएं फैलाई जा रही हैं। यह धर्म सिखाता है कि इंसान को समाज में कैसे रहना चाहिए। रायरेड्डी ने आगे कहा कि कुरान सिर्फ़ मुसलमानों तक सीमित नहीं है और कोई भी इसका अध्ययन कर सकता है। उन्होंने कहा कि पैगंबर मोहम्मद ने कुरान पूरी दुनिया को दी है। कोई भी कुरान पढ़ सकता है, मैं भी कुरान का अध्ययन करने के लिए तैयार हूं।

» इस्लाम पर दिए बयान का किया बचाव

महिला एशिया कप : भारत ने थाईलैंड को 94 रनों से हराया

» शेफाली का अर्धशतक, नंदिनी और दीप्ति ने लिए तीन-तीन विकेट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दुबई। भारतीय महिला टीम ने एशिया कप के अपने पहले मैच में थाईलैंड को हराकर विजयी शुरुआत की है। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में नौ विकेट पर 159 रन बनाए। जवाब में थाईलैंड की टीम 16.1 ओवर में 65 रन पर ऑलआउट हो गई। इस तरह भारत ने ये मुकाबला 94 रनों से अपने नाम किया। भारत के लिए इस मैच में शेफाली वर्मा ने जहां बल्लेबाजी में कमाल किया तो वहीं, नंदिनी शर्मा और दीप्ति शर्मा ने गेंद से दम दिखाया। दीप्ति ने बिना एक भी रन खर्च किए तीन विकेट झटके।

लक्ष्य का पीछा करते हुए थाईलैंड की बल्लेबाजी अच्छी नहीं रही और उसे शुरुआत से ही झटके पर झटके लगे। कोंचारोएनकाई ने टीम की ओर से सबसे ज्यादा 41 रन बनाए। इसके अलावा थाईलैंड का कोई भी बल्लेबाज दहाई का अंक नहीं पार कर सका। और टीम 65 रन पर आलआउट हो गयी। प्रतिका रावल ने थाईलैंड के खिलाफ मैच से टी20 अंतरराष्ट्रीय में डेब्यू किया। टॉस से पहले प्रतिका को कैप पहनाई गई। कप्तान हरमनप्रीत कौर ने प्रतिका को कैप दी। प्रतिका के चयन को लेकर लगातार चर्चाएं हो रही थीं, लेकिन वह आज आखिरकार भारत के लिए टी20 डेब्यू करने में सफल रहीं। इससे पहले, थाईलैंड ने टॉस जीतकर भारत को पहले बल्लेबाजी का न्योता दिया। भारत के दोनों ओपनर ने सधी हुई शुरू आत दी। शेफाली वर्मा ने शुरुआत से ही दबाव बनाया। हलांकि मंधाना के रूप में भारत को पहला झटका लगा। लेकिन शेफाली ने रन गति कम नहीं होने दीं। शेफाली ने 26 गेंदों पर अर्धशतक पूरा किया। भारत की बल्लेबाज अच्छी चल रही थी, लेकिन अचानक 13वें ओवर में उस समय टीम की बल्लेबाजी लड़खड़ा गई जब शेफाली वर्मा और रिचा घोष का जल्द विकेट गिर गया। और देखते ही देखते 137 रन पर नौ विकेट गंवा दिए। अंत में श्री चरणी और क्रांति गौड़ ने 22 रनों की साझेदारी की, जिससे टीम इंडिया का स्कोर 160 के करीब पहुंचा।

मंधाना सर्वाधिक रन बनाने वाली दूसरी बल्लेबाज बनीं

भारत को मंधाना के रूप में पहला झटका लगा जो रन आउट होकर पवेलियन लौट गईं। मंधाना ने 10 गेंदों पर चार चौकों की मदद से 19 रन बनाए। मंधाना इस मैच में भले ही सस्ते में आउट हुईं, लेकिन उन्होंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में बड़ा कीर्तिमान बना लिया। मंधाना महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने वाली दूसरी बल्लेबाज बन गई हैं। मंधाना ने इस मामले में सूजी बेट्स को पीछे छोड़ दिया है। बेट्स ने महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 10740 रन बनाए हैं। अब मंधाना उनसे आगे निकल गई हैं। मंधाना से आगे अब भारत की पूर्व कप्तान मिताली राज हैं जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय करियर में 10868 रन बनाए हैं।

देवबंद में भाजपा के खिलाफ महाविस्फोट-इस बार बदलाव

क्षितिजकांत

बेबाक बोल जनता खोल रही पोल

देवबंद विस की ग्राउंड रिपोर्ट

» मुस्लिम बोले- मौत को गले लगाते हैं, 75 साल के आरएसएस वाले बोले- विधायक ने हम पर 307 लगवाई

» किसान बोला- गन्ने का 450 वाला वादा झूठा है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देवबंद विधानसभा/ सहारनपुर। देवबंद में विस 27 चुनाव से पहले ही सियासी भूचाल आ गया है। देवबंद में तानाशाही, टैक्स, पेपर लीक पर लाठीचार्ज, वुड कार्विंग बर्बाद, राम मंदिर का चंदा तक चोरी के मामले में देवबंद के 5 लोगों ने भाजपा की पोल खोल दी है। लोग बोले- इस बार सत्ता परिवर्तन तय।

मुस्लिम, किसान, छात्र, कारीगर और खुद आरएसएस तक भाजपा के खिलाफ एक सुर में बोल रहे हैं – इस बार बदलाव होगा।

देवबंद विस पर एक नजर

देवबंद अपनी ऐतिहासिक और धार्मिक पहचान के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है, यहाँ प्रसिद्ध इस्लामिक शिक्षण संस्थान दारुल उलूम देवबंद स्थित है। राजनीतिक रूप से यह सीट काफी संवेदनशील और चर्चा में रहती है। देवबंद विधानसभा क्षेत्र भारत के उत्तर प्रदेश विधानसभा के 403 निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है । यह सहारनपुर जिले का हिस्सा है और सहारनपुर लोकसभा क्षेत्र के पांच विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है। 2008 से, यह विधानसभा क्षेत्र 403 निर्वाचन क्षेत्रों में 5वें नंबर पर है। 2008 से पहले, जब संसदीय और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन आदेश, 8 लागू हुआ, तब यह निर्वाचन क्षेत्र 400 वें नंबर पर था। 16 मार्च 17 को, नव निर्वाचित विधायक बृजेश सिंह ने घोषणा की कि उनका इरादा निर्वाचन क्षेत्र का नाम बदलकर देव-वरंद रखने का है।

मुस्लिम समाज का ऐलान-ए-जंग

हम मुस्लिम समुदाय से ताल्लुक रखते हैं, हम मौत को गले लगाते हैं और डरते किसी से नहीं हैं। इस बार हम 2027 के विधानसभा चुनाव में सत्ता का परिवर्तन करके रहेंगे।

टैक्स, तानाशाही और लाठीचार्ज का आरोप

लोग भाजपा से दुखी हो गए हैं, इतना टैक्स लगा दिया, पूरी तानाशाही है, भय का माहौल है। किसान की दुर्गति कर दी, आय दोगुनी नहीं हुई। कांवड़ियों पर फूल बरसाते हैं और बच्चे रोजगार, पढ़ाई, पेपर लीक की मांग करें तो लाठीचार्ज कर देते हैं। वुड कार्विंग वालों पर कोई रहम नहीं, बारिश में दुकानों में पानी भर जाता है, भारी नुकसान होता है।

जुमलों से पीड़ित जनता

जनता इस सरकार की छुट्टी चाह रही है, झूठे जुमलों से बहुत पीड़ित है। उत्तर प्रदेश में बदलाव होगा। देवबंद में जो जनप्रतिनिधि हैं, उनके जुल्म, अत्याचार और अहंकार से लोग पीड़ित हैं। उनके व्यक्तित्व में जुमले और डराना शामिल है। इस बार बदलाव होकर रहेगा।

गन्ना किसान का सबसे बड़ा हमला

2014 में प्रधानमंत्री कह रहे थे 450 का भाव लेना है कि नहीं, आज तक 450 नहीं मिला। चीनी 65 रुपये किलो है, गन्ना 400 रुपये। किसान दुखी है, जनता दुखी है, नौजवान दुखी है। सहारनपुर में भाजपा के गड़े झंडे उखड़ेंगे। नितिन नवीन अपनी सीट नहीं जिता पाए तो सहारनपुर क्या जिताएंगे? इनकी सरकार में राम मंदिर का चंदा भी चोरी हो गया। बैलेट पेपर से चुनाव हो जाए तो भाजपा जीत ही नहीं सकती, इनको ज्ञानेश कुमार प्रधानमंत्री बनवा रहे हैं। 2 करोड़ नौकरी का दावा किया, नौकरी दी नहीं, ऊपर से लाठी मार रहे हैं। जनता छुट्टी कर देगी।

75 साल के आरएसएस कार्यकर्ता ने विधायक पर फोड़ा बम

मैं 75 साल का हूं, मैं संघ का हूं, मैंने बचपन से अपने खून से भाजपा को सींचा है, संघ की शाखाएं लगाई हैं। जो मौजूदा भाजपा विधायक हैं, उन्होंने भाजपा, संघ, बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद के लोगों पर अत्याचार कर 307, 308 के मुकदमे लगवाए। मेरी 75 साल की उम्र में मुझ पर मुकदमा कराया, सब कार्यकर्ता जेल गए। इसीलिए सब भाजपा से दूर हैं। यह विधायक दोबारा राजनीति में उठ नहीं पाएगा। हमारा एक-एक कार्यकर्ता इसके 5 से 10 वोट कटवाएगा। इस बार हम समाजवादी पार्टी को लाएंगे।

प्राचीन एवं पौराणिक इतिहास

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले का एक ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व का नगर है, जो महाभारत काल से जुड़ा हुआ है और विश्व प्रसिद्ध इस्लामिक शिक्षण केंद्र दारुल उलूम देवबंद के लिए जाना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार देवबंद का प्राचीन नाम देववृंद था, जिसे महाभारत कालीन माना जाता है।

धार्मिक महत्व

ऐसा माना जाता है कि यहाँ पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान कुछ समय बिताया था और यहाँ देवी दुर्गा का प्राचीन मंदिर (त्रिपुरमालिनी देवी मंदिर) भी स्थित है।

देवबंद आंदोलन और दारुल उलूम का इतिहास

स्थापना (1866-1867) ब्रिटिश शासनकाल और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद देश में मुसलमानों के धार्मिक व सांस्कृतिक पतन को रोकने के लिए। इसकी शुरुआत मौलाना मुहम्मद कासिम नानोत्वी, राशीद अहमद गंगोही और मुहम्मद आबिद हुसैन द्वारा की गई थी। दारुल उलूम देवबन्द की स्थापना का मुख्य उद्देश्य इस्लामिक शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करना, अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ वैचारिक प्रतिरोध तैयार करना और मुस्लिम समुदाय में धार्मिक मूल्यों को बचाए रखना था। देवबंद के उलेमा (धार्मिक विद्वानों) ने ब्रिटिश उपनिवेशवाद का कड़ा विरोध किया।वर्ष 1919 में स्थापित जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में मिश्रित राष्ट्रवाद और हिंदू-मुस्लिम एकता के सिद्धांत का समर्थन किया था। आज देवबंद पूरी दुनिया में सुन्नी हनफी इस्लाम के प्रमुख पुनरुद्धारवादी और शैक्षणिक केंद्र देवबंदी आंदोलन के उद्गम स्थल के रूप में जाना जाता है।

यूपी में धांय धांय...सरकार के भयमुक्त यूपी के दावे पर सवाल

» सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव ने हालिया घटनाओं को लेकर सरकार पर हल्ला बोला

» हत्या, रेप और एनकाउंटर के जाल में उलझा यूपी का भविष्य

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में सरकार कहती है कि यूपी में अपराधी कानून से डरते हैं और यहां कानून का राज है और आम आदमी भयमुक्त होकर जी रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंच से लगातार यह दावा कर रहे हैं कि यूपी में कानून व्यवस्था ऐसी है कि अपराध करने से पहले अपराधी सौ बार सोचता है। लेकिन सवाल यह है कि अगर अपराधी सचमुच डर रहे हैं तो फिर राजधानी लखनऊ में धीरेंद्र प्रताप सिंह की हत्या कैसे हो जाती है?

अगर यूपी सचमुच भयमुक्त है तो शामली में हरियाणवी सिंगर अंकित बालियान की हत्या क्यों होती है? और अगर कानून का खौफ अपराधियों के दिल में बैठ चुका है तो ग्रेटर नोएडा में छह साल की मासूम को अगवा कर उसके साथ दरिंदगी और फिर हत्या जैसी वारदात आखिर किस भरोसे पर होती है?

यहां सवाल किसी एक अपराध का नहीं है यहां सवाल उस भरोसे का है जिसके नाम पर सरकार जनता से कहती है कि डरने की जरूरत नहीं है कानून आपके साथ है। लेकिन जब एक परिवार का सदस्य घर से निकलकर वापस नहीं लौटता जब किसी कलाकार की गोली मारकर हत्या कर दी जाती है जब एक मासूम बच्ची सुरक्षित नहीं रह पाती तब सरकारी दावे और जमीन की सच्चाई आमने सामने खड़ी दिखाई देती है। लखनऊ में धीरेंद्र प्रताप सिंह की हत्या का मामला इसलिए भी गंभीर है क्योंकि यह राजधानी का मामला है। उधर शामली में अंकित बालियान की हत्या के बाद मामला और गर्म हुआ और पुलिस ने हत्याकांड से जुड़े दो शूटरों को मुठभेड़ में मार गिराने की जानकारी दी।

एनकाउंटर के बाद जश्न नहीं अपराध से पहले रोकथाम चाहिए

यूपी की कानून-व्यवस्था की बहस में एनकाउंटर हमेशा से बड़ा राजनीतिक विषय रहा है। समर्थकों के लिए यह अपराधियों में भय पैदा करने का प्रतीक है। आलोचकों के लिए यह सवाल उठाने का विषय है कि क्या पुलिस कार्रवाई न्यायिक प्रक्रिया का विकल्प बन सकती है। लेकिन इससे भी बड़ा सवाल है कि अगर पुलिस को अपराधी तक पहुंचने में सफलता मिलती है तो क्या उसी क्षमता का इस्तेमाल अपराध होने से पहले रोकने में नहीं किया जा सकता? क्योंकि उत्तर प्रदेश में चुनावी राजनीति जैसे जैसे तेज होगी कानून व्यवस्था का मुद्दा फिर केंद्र में आएगा।

भयमुक्त यूपी के दावे की खुली पोल : अखिलेश यादव

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अंकित बालियान हत्याकांड से लेकर ग्रेटर नोएडा की छह साल की मासूम की रेप के बाद हत्या को लेकर योगी सरकार पर तीखा हमला बोला है। उनका आरोप है कि मुख्यमंत्री भले ही माफिया और अपराधियों के यूपी छोड़ने का दावा कर रहे हों लेकिन जमीन पर तस्वीर इसके उलट दिखाई दे रही है। अखिलेश ने आरोप लगाया कि दूसरे राज्यों के गैंग यूपी में आकर बेखौफ वारदात कर रहे हैं और पुलिस-प्रशासन अपराधियों पर लगाम लगाने में नाकाम साबित हो रहा है। अखिलेश का हमला यहीं नहीं रुका। अंकित बालियान की शामली में सरेआम हत्या का हवाला देते हुए उन्होंने सवाल उठाया कि जिस वारदात में 18 राउंड गोलियां चली वह आखिर किस तरह के कानून के राज की तस्वीर है?

तुम्हारी फाइलों में गांव का मौसम सुहाना है!

इसके बाद बात करते हैं ग्रेटर नोएडा की छह साल की उस मासूम बच्ची का जिसके साथ रेप और हत्या की घटना ने एक बार फिर उस सवाल को सामने ला दिया है जिसे कोई सरकार सिर्फ आंकड़ों से नहीं दबा सकती क्या हमारे बच्चे सचमुच सुरक्षित हैं? आरोपी के एनकाउंटर के बाद पुलिस कार्रवाई पर चर्चा हो सकती है लेकिन उस परिवार से पूछिए जिसने अपनी बच्ची खो दी। उसके लिए कानून का राज उस वक्त कहां था जब अपराधी बच्ची को उठा ले गया था? सरकार के पास आंकड़े हैं। पुलिस के पास कार्रवाई की रिपोर्ट है। अदालत के पास कानून है। लेकिन जनता के पास एक सवाल है सुरक्षा का मतलब अपराधी को अपराध के बाद पकड़ना है या अपराध होने से पहले नागरिक को सुरक्षित रखना ?चुनावी मंच पर भयमुक्त यूपी का नारा जितना बड़ा होगा जमीन पर किसी मां की चीख किसी परिवार का मातम और किसी बच्ची की असुरक्षा का सवाल उतना ही बड़ा होकर सामने आएगा।

राज्य मानवाधिकार आयोग ने मोहित और सुमित प्रकरण में दर्ज किया केस

» आजाद अधिकार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमिताभ ठाकुर ने की थी शिकायत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश राज्य मानवाधिकार आयोग (एसएचआरसी) ने शामली में अंकित बालियान हत्याकांड के कथित आरोपियों मोहित एवं सुमित की पुलिस मुठभेड़ में मृत्यु के संबंध में पूर्व एसएचआरसी अधिकारी एवं आज़ाद अधिकार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमिताभ ठाकुर द्वाराकी गयी शिकायत पर औपचारिक रूप से केस दर्ज कर लिया है। आयोग द्वारा इस शिकायत को पंजीकृत किया गया है।

अमिताभ ठाकुर ने अपनी शिकायत में कहा कि अंकित बालियान की हत्या अत्यंत जघन्य थी और उसके हत्यारों को कानून के अनुसार दंड मिलना चाहिए। लेकिन कथित हत्यारों की पुलिस मुठभेड़ में मृत्यु की परिस्थितियों की निष्पक्ष जांच भी उतनी ही आवश्यक है। उन्होंनेविशेष रूप से 30 अगस्त की रात 8:19 बजे पत्रकार अरुण (आज़ाद) चहल द्वारा एक्स अकाउंट पर की गयी पोस्ट का उल्लेख किया, जिसमें दो आरोपियों के पुलिस के हाथ लगने, दो के भारत से बाहर भागने तथा उसी रात एनकाउंटर होने की बात कही गयी थी।

अंकित हत्याकांड

अमिताभ ठाकुर

इसके लगभग आठ घंटे बाद दो कथित शूटर पुलिस मुठभेड़ में मारे गये। अमिताभ ठाकुर ने इस असाधारण घटनाक्रम से जुड़े तथ्यों की स्वतंत्र एवं निष्पक्ष जांच की मांग की है।

मणिपुर में फिर भड़की हिंसा

» पुलिस पर पथराव के बाद आंसू गैस के गोले छोड़े

» एनआरसी-जनगणना को लेकर हो रहा था विरोध

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इंफाल। मणिपुर के काकचिंग जिले में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) को अपडेट करने की मांग को लेकर निकाला गया मशाल जुलूस हिंसक हो गया। प्रदर्शनकारियों के एक समूह ने पुलिस पर पथराव किया, जिसके जवाब में सुरक्षाबलों ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए कई आंसू गैस के गोले छोड़े।

घटना में कुछ प्रदर्शनकारियों को मामूली चोटें आई हैं। वाबागाई, हियांगलाम और आसपास के इलाकों के सैकड़ों ग्रामीणों ने रविवार रात करीब तीन किलोमीटर लंबा मार्च निकाला। प्रदर्शनकारी 'नो एनआरसी, नो सेंसस' के नारे लगा रहे थे। प्रदर्शनकारियों की मांग थी कि राज्य में जनगणना की प्रक्रिया शुरू करने से पहले एनआरसी को अपडेट किया जाए। साथ ही उन्होंने आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों के पुनर्वास से पहले जनगणना कराने का विरोध किया। अधिकारियों के अनुसार, प्रदर्शनकारी जब काकचिंग जिला मुख्यालय की ओर बढ़ रहे थे, तब पुलिस ने कीराक बांध इलाके के पास उन्हें रोक दिया। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों से वापस लौटने को कहा। इसके बाद स्थिति तनावपूर्ण हो गई और प्रदर्शनकारियों में से कुछ लोगों ने पुलिस पर पथराव शुरू कर दिया।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा